वर्ष 25 | अंक 4 | नवम्बर, 2023
ISSN No. 2582-4546
₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

क्या आप जानते हो ?

बाल-दिवस दुनिया के लगभग हर देश में मनाया जाता है लेकिन इसे मनाने की तिथि एक नहीं है। जनवरी से लेकर दिसम्बर तक हर महीने में कोई न कोई देश बाल-दिवस मना रहा होता है।

भारत 14 नवम्बर को बाल-दिवस मनाता है। यह प्रथम प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन भी है। नेहरू जी बच्चों को बहुत प्यार करते थे और बच्चे भी उन्हें चाचा नेहरू कहते थे।

विश्व बाल-दिवस 20 नवम्बर को मनाया जाता है। 20 नवम्बर का दिन इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि 1959 को इसी दिन संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा "बाल-अधिकार घोषणा पत्र" स्वीकार किया गया था। लगभग 25 देश इस दिन बाल-दिवस मनाते हैं।

इससे पहले 1950 में अनेक देशों ने 1 जून को बाल-दिवस मनाना प्रारम्भ कर दिया था। आज भी लगभग 50 देश इसी दिन बाल-दिवस मनाते हैं। किसी एक दिन बाल-दिवस मनाने वाले देशों की यह सबसे बड़ी संख्या है।

"बाल-अधिकार घोषणा पत्र" में बच्चों के भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा, सम्मान, आजीविका और शोषण से बचाव जैसे मुख्य अधिकार शामिल हैं। सबसे पहले 1924 में जिनेवा में तब के राष्ट्र-संघ ने यह प्रस्ताव पारित किया था और 1959 में आज के संयुक्त राष्ट्र संघ ने।

प्यारे बच्चो,

'बच्चों का देश' के 25वें वर्ष में आपका स्वागत है।

पत्रिका में छपी हर रचना में एक संदेश होता है।

ध्यान से पढ़ो और संदेश को ढूँढ़ो।

यह संदेश आपके जीवन को कैसे अच्छा बना सकता है, सोचो!

इस माह का विचार जिसे आपको समझना है और

इसके बारे में अपने मम्मी-पापा, शिक्षक और मित्रों से बात करनी है।

प्रक्रिया पर
ध्यान दो,
बेहतर **परिणाम**
स्वत: मिलेगा।

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 25 अंक : 4 नवम्बर, 2023

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : सुशील कुमार, दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : अविनाश नाहर
महामन्त्री : भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन
प्रकाशन मन्त्री : देवेन्द्र डागलिया
पत्रिका प्रसार संयोजक : सुरेन्द्र नाहटा

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- ❑ 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- ❑ लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है।
- ❑ समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

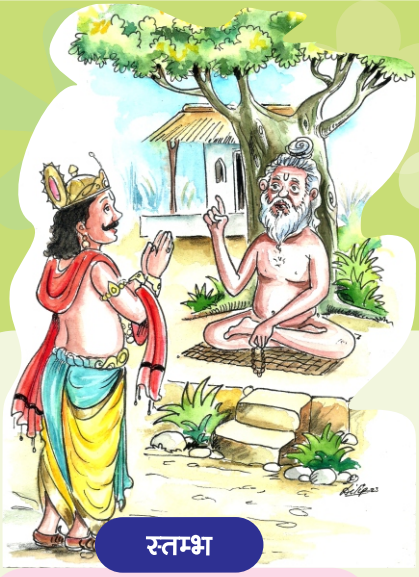

स्तम्भ

06 सम्पादक की पाती
07 महाप्रज्ञ की कथाएँ
16 सुडोकू
20 आओ पढ़ें : नई किताबें
29 दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो
30 प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये
33 व्हाट्सएप कहानी
41 पढ़ो और जीतो, उत्तरमाला
42 कलम और कूँची
44 नन्हा अखबार
46 प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान
49 किड्स कॉर्नर

आलेख

08 **राज्य पक्षी–6 : सारस क्रौंच**
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
11 **बिरसा मुंडा**
गोपाल माहेश्वरी
26 **एशियाई खेल 2022**
अनिल जायसवाल
28 **खरगोश**
डॉ. बानो सरताज
34 **मेरा देश : गाँव विशेष–11**
शिखर चन्द जैन
38 **विश्व विरासत स्थल–2**
नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

विविधा

12 **क्रियाएँ बनाओ**
राकेश शर्मा राजदीप

13 **रंग भरकर देखो**
चाँद मोहम्मद घोसी

14 **विस्मयकारी भारत–11**
रवि लायटू

17 **वर्ग पहेली**
राधा पालीवाल

21 **बूझो तो जानें**
गौरीशंकर वैश्य विनम्र

33 **दिमागी कसरत**
प्रकाश तातेड़

37 **प्रेरक प्रसंग**
पूरन सरमा

48 **अणुव्रत की बात**
मनोज त्रिवेदी

49 **जन्मदिन की बधाई**

कहानी

09 **मुसीबत से मुकाबला**
रजनीकान्त शुक्ल

15 **बाँटी खुशियाँ**
ललित शौर्य

19 **हर चमकीली चीज सोना....**
डॉ. मोहम्मद अरशद खान

23 **बदलाव की बयार**
सुधा आदेश

31 **मै तुलसी घर–आँगन की**
राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव

35 **राकेट वाला अब्दुल**
अर्चना त्यागी

39 **सबसे शक्तिशाली कौन?**
मीरा जैन

40 **मिट्टी के दीये**
पवन कुमार वर्मा

कविता

08 **गिल्लू ने समझाया**
प्रिया देवांगन 'प्रियू'

10 **जगमग धरती सारी**
डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'

18 **दीप जले हैं**
पंकज मिश्र 'अटल'

18 **दीवाली के दोहे**
राजेन्द्र निशेश

22 **बीज और पेड़**
अश्वनी कुमार पाठक

22 **इस दीवाली में**
प्रभुदयाल श्रीवास्तव

25 **बच्चों का प्रिय दिवस**
भगवती प्रसाद द्विवेदी

30 **बूझो पहेली कविता**
इंजी. आशा शर्मा

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

स्कूल में बाल–दिवस के कार्यक्रम में भाग लेकर मोनू अपने मम्मी–पापा के साथ घर लौट रहा था। मोनू आज बड़ा खुश था। हो भी क्यों नहीं! आज उसे कार्यक्रम में अपनी ड्राइंग उन प्रसिद्ध चित्रकार को दिखाने का मौका मिला था और उन्होंने मोनू के चित्र की खूब तारीफ की थी। उन्होंने यह भी कहा था कि जो बच्चे पढ़ाई के साथ–साथ चित्रकला, नाट्यकला और संगीत जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में भी बढ़–चढ़ कर भाग लेते हैं वे जीवन में अधिक सफल होते हैं।

कार की पिछली सीट पर बैठा मोनू खिड़की के बाहर के नज़ारे देख रहा था। आज उसे सड़क के किनारे सजा बाजार, दुकानें, सड़क और फुटपाथ पर चलते हुए लोग – सभी बहुत अच्छा लग रहा था। कहते भी हैं ना – आप जैसा सोचते हैं, दुनिया वैसी ही लगने लगती है। तभी उसका हाथ सीट पर रखे अखबार पर पड़ा तो वह उठा कर पढ़ने लगा। अखबार के पहले पन्ने पर ही एक खबर देखकर वह चौंका! बड़ा–सा हैडिंग था – 'बच्चों की जिंदगी तबाह कर रहे युद्ध!'

यह एक रिपोर्ट थी जिसमें बताया गया था कि किस प्रकार पिछले एक साल में दुनिया में चल रहे युद्धों में हजारों बच्चे मारे गए, लाखों घायल हो गए और न जाने कितने बच्चे अनाथ हो गए। ऐसे बच्चों की कुछ दर्दनाक तस्वीरें भी अखबार में छपी थीं जिन्हें देख कर मोनू का मन उदास हो गया। कुछ देर मोनू गुमसुम बैठा रहा और फिर धीमी–सी आवाज में बोला – 'युद्ध में तो जवान मारे जाते हैं, फिर हजारों बच्चे क्यों मर रहे हैं?'

पापा खामोश रहे, क्या जवाब देते? मम्मी की आँखों में झाँका, वहाँ भी शून्य नजर आ रहा था। कुछ सेकंड इंतज़ार के बाद जब मोनू ने वही शब्द फिर दोहराये तो मम्मी बोली 'अरे मोनू! अभी तो खुशी से इतने उछल रहे थे, यह अचानक कैसे सवाल पूछने लगे तुम?'

मोनू ने अखबार में छपी वह खबर आगे कर दी। अब तक गाड़ी घर के बाहर आकर रुक गई थी। अखबार हाथ में थामे मम्मी नीचे उतरी और मोनू के गले में अपनी बाहें डाले घर में आ गई। सोफे पर बैठे तीनों लम्बी देर तक युद्ध के कारणों और उनसे होने वाली बरबादी के बारे में बातें करते रहे।

उठते–उठते मोनू बोला –'मैं बड़ा होकर कुछ करूँगा ऐसा, जिससे लोग प्यार से रह सकें और आपस में झगड़ें नहीं।'

मम्मी और पापा ने उसे प्यार से अपने पास बिठा लिया और भावुक स्वर में मम्मी बोली – 'बड़ा होकर क्यों बेटा! हम अब भी बहुत कुछ कर सकते हैं। क्या हम आज से यह संकल्प ले सकते हैं कि हम तीनों एक–दूसरे की बात को तसल्ली से सुनेंगे, कभी झगड़ा नहीं करेंगे, गुस्से में नहीं चिल्लायेंगे और दूसरे को दुःख पहुँचे ऐसी बात नहीं कहेंगे।' यह कहते हुए मम्मी ने अपना हाथ आगे किया तो पापा और मोनू ने भी अपने हाथ मम्मी के हाथ पर रख दिए और बोल पड़े – 'हाँ, हाँ! क्यों नहीं!' मोनू के चेहरे पर खुशी फिर लौट आई थी।

बच्चो, हमें भी यह सोचना है कि हम अपने स्तर पर झगड़े, विवाद, मारपीट, हिंसा, मतभेद आदि रोकने के लिए क्या कर सकते हैं और आज से ही ऐसा प्रयास प्रारम्भ कर देना है। हम सब मिलकर दुनिया को निश्चय ही और भी खूबसूरत बना सकते हैं। दीपावली एवं बाल दिवस की ढेरों शुभकामनाएँ।

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

किसका त्याग बड़ा?

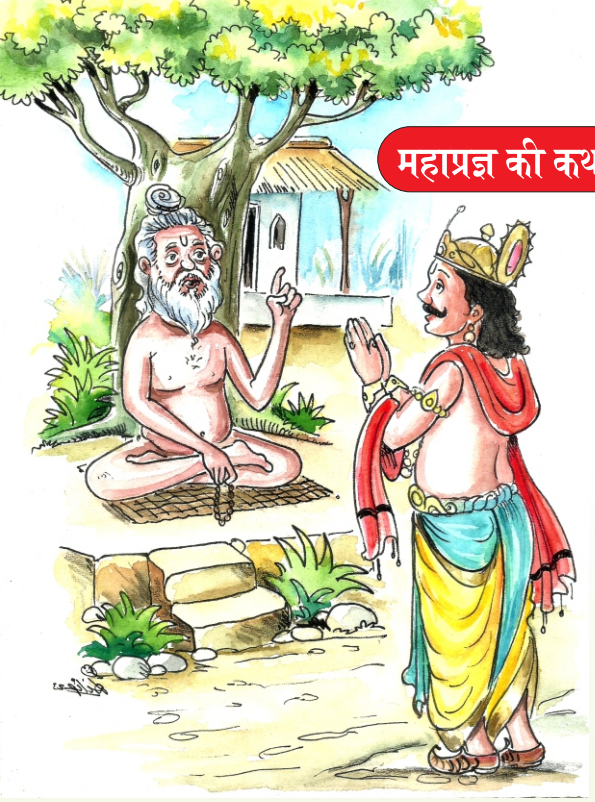

एक था संन्यासी। संन्यासी के पास में कुछ भी नहीं था। वह तपस्वी था। जनता में उसकी काफी ख्याति फैल गयी। हजारों–हजारों व्यक्ति उसके पास आने लगे। बात राजा तक पहुँची। राजा के मन में श्रद्धा का भाव जगा और वह संन्यासी के पास आया। संन्यासी को देखा। आसपास का वातावरण देखा। राजा बहुत प्रभावित हुआ।

राजा के मन पर संन्यासी की तपस्या की, उसके त्याग की अमिट छाप पड़ गयी। एक दिन वह बोला– "गुरुदेव! आप बहुत बड़े त्यागी हैं। आपके पास वस्त्र नहीं, मकान नहीं, पैसा नहीं, कुछ भी नहीं। कितने बड़े त्यागी हैं।" राजा ने बहुत प्रशंसा की।

संन्यासी गम्भीर मुद्रा में सुनता रहा। कुछ क्षण बाद राजा मौन हो गया तो संन्यासी बोला– "राजन्! तुमने मेरी प्रशंसा की, पर वास्तव में मुझे लगता है कि तुम्हारे त्याग के सामने मेरा त्याग छोटा है। तुम बड़े त्यागी हो।"

राजा अवाक् रह गया। सोचा– यह कैसे? मैं त्यागी कैसे हो सकता हूँ? इतने बड़े राज्य का, ऐश्वर्य का, वैभव का भोग कर रहा हूँ और गुरुदेव कह रहे हैं कि तुम बड़े त्यागी हो। यह कैसे? राजा समझ नहीं पाया। उसने पूछा– "गुरुदेव! मैं कहाँ त्यागी हूँ? त्यागी तो आप हैं।"

संन्यासी बोला– "राजन्! मैंने जो कुछ छोड़ा है, वह बहुत के लिए अल्प को छोड़ा है। मैं परमात्मा बनना चाहता हूँ, परमात्मा का ऐश्वर्य पाना चाहता हूँ। उसके लिए मैंने घर छोड़ा है। मैंने अल्प छोड़ा है और बहुत बड़े के लिए छोड़ा है और तुम बहुत (ईश्वर) को छोड़कर अल्प (वैभव) में मुग्ध हो रहे हो। कहो, तुम्हारा त्याग बड़ा है या मेरा?" राजा यह बात सुनकर नत मस्तक हो गया।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 350 रु.
त्रैवार्षिक : 900 रु.
पंचवार्षिक : 1500 रु.
दस वर्ष : 3000 रु.
पंद्रह वर्ष : 7500 रु.
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

बच्चों का देश

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -
नकद / चैक / ऑनलाइन

ANUVRAT VISHVA BHARTI SOCIETY
IDBI Bank BRANCH Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC : IBKL0000104

UPI
RAZOR PAY
https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634515

हिन्दी नाम – सारस क्रौंच
अँग्रेजी नाम – Sarus Crane
वैज्ञानिक नाम –Grus antigone
फोटो – रघु अय्यर

उत्तर प्रदेश का राज्य पक्षी : सारस क्रौंच

सारस क्रौंच सबसे ऊँची उड़ान भरने वाला एक बड़ा पक्षी है। भारत में यह उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, बिहार और महाराष्ट्र में ही देखा जा सकता है। यह नदियों, झीलों, नहरों, बड़े नालों और तालाबों के किनारे दलदली तथा नमी वाली जगहों पर रहना पसन्द करता है।

इसके पैर के पंजों से लेकर चोंच के सिरे तक ऊँचाई 150 से 165 सेन्टीमीटर तक होती है। उड़ते समय इसके पंखों का फैलाव 225 सेन्टीमीटर तक हो सकता है।

यह हल्का नीलापन लिए धूसर रंग का पक्षी है। इसका सिर चटक लाल रंग का होता है। इसकी लम्बी गर्दन का ऊपरी भाग सिर के समान लाल होता है। इसके गले के नीचे का भाग, सीना, पेट और शरीर के नीचे का भाग भी सफेद होता है। इसकी आँखें नारंगी तथा चोंच मटमैले रंग की होती है। इसके पैर लम्बे तथा गुलाबी होते हैं।

डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
जयपुर (राजस्थान)

गिल्लू ने समझाया

लगी सिसकने चिड़िया रानी,
देख सभी घबराये।
कौआ, कोयल, मैना, तोता,
पास जरा सा आये।।

क्यों आँखें गीली करती हो,
हमको तनिक बताओ।
परेशान बैठे हैं सारे,
इतना नहीं सताओ।।

धीमी-धीमी बोली चिड़िया,
देह घुसी बीमारी।
पेट दर्द सोने ना देता,
इससे मैं हूँ हारी।।

चलो पास डॉक्टर के चिड़िया,
कोयल मैना बोली।
मगर डरी थी ये चिड़िया जो,
जुबान तक ना खोली।।

उड़कर कौआ सँग में लाया,
डॉक्टर गिल्लू राजा।
हुई बड़ी आँखें चिड़िया की,
बज गया बैंड बाजा।।

सुई निकाली गिल्लू ने जब,
जोर-जोर चिल्लाई।
गुपचुप चिवड़ा और समोसे,
याद सभी की आई।।

हाथ जोड़कर माफी माँगी,
कभी नहीं खाऊँगी।
आम, सेब अरु केला खाकर,
ताकत मैं लाऊँगी।।

बीमारी जब देह लगी तो,
संकल्प यही ठाना।
गिल्लू ने सबको समझाया,
सादा भोजन खाना।।

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
राजिम गरियाबंद (छत्तीसगढ़)

मुसीबत से मुकाबला

मेघालय राज्य के पश्चिमी खासी हिल्स जिले में मरकसा नाम का एक गाँव है। इस गाँव में एस.के. जाना अपने घर में अपनी पत्नी व दो बटियों के साथ कमरे में लेटे थे। एस.के.जाना यकायक बिस्तर से उठे और अपने घर की रसोई की ओर चल दिए जो उनके घर के बाहरी हिस्से में थी। उन्हें उस समय प्यास लगी थी। घर के अन्य सदस्यों को परेशान करना उन्होंने उचित नहीं समझा और खुद ही उठकर किचन की ओर चल पड़े।

वे उस समय रसोई में ही थे जब दो बदमाश छुपते–छुपाते उनके घर में घुस आए। उनके चेहरों पर उस समय नकाब चढ़ा हुआ था। घर में घुसकर आगे बढ़ते ही उन्हें रसोईघर में एस.के.जाना मिल गए। उन्होंने हथियारों के दम पर उन्हें अपने काबू में कर लिया और उन पर जानलेवा हमला कर दिया। वे उनसे घर में रखे रुपयों के बारे में पूछताछ कर रहे थे। घायल एस.के.जाना के पास कोई दूसरा चारा नहीं था। उन्होंने घर में रखे रुपयों के बारे में बता दिया। बाहर के कमरे में ही उन बदमाशों ने रुपयों को अपने कब्जे में ले लिया। अब वे बदमाश पीटते हुए उनसे और दूसरे कीमती सामान के बारे में पूछने लगे। शरीर से निकलने वाले खून और होने वाले दर्द से एस.के. जाना की चीखें निकलने लगीं जिन्हें सुनकर अन्दर के कमरे में सो रही उनकी पत्नी और बच्चे बाहर आ गए।

बाहर आकर जब उन्होंने एस.के.जाना को खून से लथपथ दर्द से कराहते देखा तो उनके होश उड़ गए। वे मदद के लिए चीखते हुए घर के अन्दर की ओर भागे। जब उन बदमाशों ने उनको चिल्लाते हुए सुना तो वे उन्हें रोकने के लिए उनके पीछे–पीछे दौड़ पड़े। जब उन बदमाशों को अपने पीछे दौड़ता हुआ पाया तो यह देख बड़ी बेटी लिंगखोई और उसकी बहन ने उन्हें रोकने के लिए जल्दी से अपने कमरे के दरवाजे को अन्दर से बन्द कर लेना चाहा। लेकिन तब तक वे बदमाश उस दरवाजे के पास तक आ चुके थे।

देखें पृष्ठ 13...

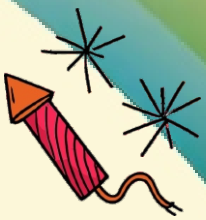

जगमग धरती सारी

गाँव-शहर खुशियों को लेकर फिर दीवाली आई,
इस अवसर पर घर-घर में दिखती है साफ-सफाई।
गली-गली में हर दुकान है अब तो सजी-सजाई,
कई खिलौने फुलझड़ियाँ हैं और पटाखे भाई।

घर में खील-बताशे आए बनने लगी मिठाई,
चहल-पहल है और सजावट मौसम है सुखदाई।
रंग-बिरंगी लड़ियाँ अपना जलवा आज दिखातीं,
लगता तनकर खड़े अँधेरे से आँखें झपकातीं।

दीप जले, रोशनी हर जगह फैल गई है न्यारी,
कितनी सुन्दर दिखती हर पल जगमग धरती सारी।
पर्यावरण नहीं हो दूषित ध्यान रखें हम सारे,
एटम बम, राकेट, पटाखे घर में हों न हमारे।

अगर हो सके तो फुलझड़ियों को भी अब हम त्यागें,
आज व्यर्थ की चकाचौंध की ओर नहीं हम भागें।
माटी के नन्हे दीपों से दीपावली मनाएँ,
मिले प्रेम-आशीष बड़ों का अनगिन खुशियाँ पाएँ।

माँ जो भी पकवान बनाती उन्हें प्रेम से खाएँ,
झूमें हर पल हँसें-हँसाएँ हम सब नाचें-गाएँ।

डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'
भैरवाँ चम्पावत (उत्तराखण्ड)

बालक बना महान

अमर बलिदानी वनवीर

बिरसा मुंडा

बात उन्नीसवीं शताब्दी की है। 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम ऊपरी तौर पर चाहे पूरी तरह सफल न रहा पर इस संग्राम ने भारतीयों के मन में स्वतन्त्रता की जो लौ जलाई, वह बुझ न सकी थी। उधर अँग्रेजों के अत्याचार भी बढ़ते जा रहे थे।

पारिवारिक परिचय एवं बचपन

उस समय का बंगाल प्रेसीडेंसी क्षेत्र आज झारखंड कहलाता है। उसके रांची नगर में एक वनग्राम उलीहातू है। इसी गाँव में पिता सुगना मुंडा और माता करमी मुंडा के घर 15 नवम्बर 1875 को एक बालक ने जन्म लिया, नाम रखा गया था बिरसा।

बिरसा बचपन से ही खेलकूद में आगे थे और बाँसुरी भी कमाल की बजाते थे। कुश्ती लड़ने में भी कुशल थे। स्वभाव से बहुत नटखट होते हुए भी अपने वनवासी समाज के प्रति उनके मन में अगाध अपनापन था। वे बचपन से ही उनके दुःख दर्द न केवल समझते बल्कि उन्हें दूर करने के उपाय भी सोचने का प्रयास करते।

शिक्षा से जन जागरण की ओर

बिरसा के वनवासी परिवार की आर्थिक दशा ठीक न थी। अपने इस उधमी पुत्र को पिता ने उसके मामा के यहाँ भेज दिया। बिरसा यहाँ पाठशाला जाने लगे। दिन–दिन भर जंगलों में भटकने वाला मन अब पढ़ाई में रम गया। वनवासी समाज में शिक्षा का अभाव रहता था लेकिन बिरसा प्रारम्भिक पढ़ाई के बाद उच्च शिक्षा की ओर बढ़ चले। उन दिनों शिक्षा जगत में ईसाई मिशनरियों के ही कालेज उपलब्ध थे। इसलिए वे भी वहीं पढ़ने लगे।

पढ़ाई के दौरान बिरसा ने देखा कि अँग्रेज भोले–भाले वनवासियों की जमीनें छीनकर उन पर भयंकर अमानवीय अत्याचार करते हैं। उनसे बेगारी, मजदूरी करवाते हैं। कठोरतम परिश्रम के बदले उनको मिल पाता है अधपेट खाना और ढेर–सा अपमान।

बिरसा ने देखा कि अँग्रेज वनवासियों को उनका धर्मभ्रष्ट कर अपना धर्म अपनाने को मजबूर करते रहते हैं तो अपनी धरती, अपने धर्म और अपनी संस्कृति की इस बहुत बुरी दशा को सह न सके और जंगलों में घूम–घूम कर वनवासी युवाओं को संगठित करना शुरू कर दिया।

बिरसा के नेतृत्व में संघर्ष

बिरसा पढ़े–लिखे थे। वे अँग्रेजी दाँव–पेंच समझ रहे थे। जन–जागरण आवश्यक था। वे वनवासियों में यह भावना जाग्रत करते घूमने लगे कि वनवासियों की संगठित शक्ति के सामने अँग्रेज कुछ भी नहीं हैं। वे समझाते कि हमारी अपनी जमीन पर हमें कोई दूसरा जो सात समन्दर पार से आया है, हमें कैसे हरा सकता है? हम केवल सताए जाने के लिए नहीं हैं। इसलिए उठो! संगठित होकर अपनी धरती अपना धर्म बचाओ। उनकी यह क्रांति 'उलगुलान' कहलाई।

उनकी निर्भय दहाड़ गूँज उठी "ओ गोरी चमड़ीवाले विलायती बन्दरों! यह छोटा नागपुर हमेशा से हमारा है। यहाँ तुम्हारा क्या काम? तुम अपने देश लौट जाओ।" प्रचंड ललकार से अँग्रेजी हुकूमत थर्रा उठी लेकिन अँग्रेजों को अपनी ताकतवर सत्ता का बहुत घमंड था। आमने–सामने संघर्ष में एक ओर अँग्रेजी गोला–बारूद, बन्दूकें और तोपें थीं तो दूसरी ओर वनवासियों के अपने तीर–कमान, भाले, बल्लम और मन में साहस, स्वाभिमान और नेतृत्व पर भगवान जितना भरोसा। लगभग 400 वनवासियों ने अपनी धरती और धर्म के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। 300 वनवासी क्रांतिकारी कैद हुए पर बिरसा हाथ न आए।

बिरसा इतने चतुर, चौकन्ने, फुर्तीले और साहसी वीर थे कि अँग्रेज परेशान थे। वे बिरसा को घेरने का कितना भी प्रयास करते पर बिरसा उन पर हमला करके किसी चमत्कार जैसे गायब हो जाते। अंततः अपने ही एक साथी ने धन के लालच में 24 दिसम्बर 1899 की रात जब वे घायल और थके होकर सो रहे थे, उन्हें धोखे से पकड़वा दिया। 9 जून 1900 को मात्र 25 वर्ष की आयु में रांची जेल में उनकी हत्या कर दी गई और बाहर विद्रोह न फैले इसलिए अँग्रेजों ने बिरसा मुंडा की मृत्यु हैजा से होने की अफवाह फैला दी।

वनवासी समाज उन्हें उनके जीवन–काल में ही 'भगवान बिरसा मुंडा' कहने लगा था। अपनी धरती के लिए लड़ने वाले ये महापुरुष 'धरती आबा' के नाम से भी विख्यात हुए। वे केवल वनवासी समाज के ही नहीं बल्कि सभी भारतीयों के प्रेरणा पुरुष हैं। वे धर्म, संस्कृति और धरतीमाता के सम्मान की रक्षा की भावना के कारण आदर्श एवं अनूठे नायक हैं।

प्रतिवर्ष 15 नवम्बर को उनकी जयन्ती पर कृतज्ञ राष्ट्र जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाकर इस महान बलिदानी वनवीर को अपनी आदरांजलि देता है।

गोपाल माहेश्वरी
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

क्रियाएँ बनाओ ...

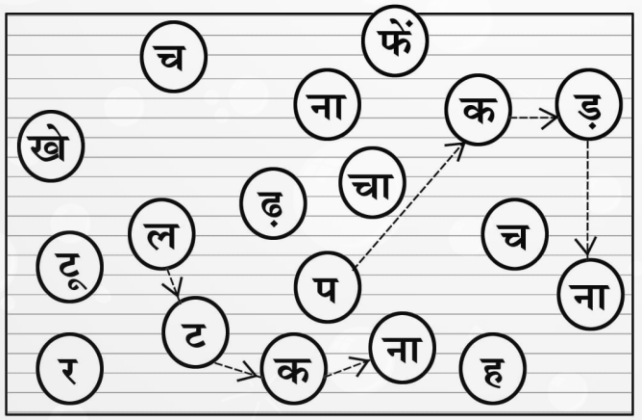

यहाँ गोलों में कई अक्षर इधर-उधर बिखरे फैले हैं। आपको अपना दिमाग दौड़ाकर इस तरह जोड़ना है कि वे क्रियाओं में बदल जाएँ। नीचे कटी रेखाओं में दो उदाहरण भी प्रस्तुत किए गए हैं। आप चाहो तो एक अक्षर कई बार उपयोग में ले सकते हो।

राकेश शर्मा राजदीप
उदयपुर (राज.)

'मुसीबत से मुकाबला' पृष्ठ 9 का शेष....

वे दोनों लड़कियाँ उस दरवाजे को बन्द करने के लिए अन्दर की ओर खींच रहीं थीं जबकि वे दोनों बदमाश उसे खोलने के लिए बाहर की ओर खींच रहे थे। उनके हाथ में हथियार भी थे इसलिए वे दरवाजे पर पूरी ताकत नहीं लगा पा रहे थे। इसी बीच दरवाजे को अन्दर की ओर खींचते हुए लिंगखोई की निगाह वहीं बगल में रखे खेती में काम आने वाले हथियार दाओ पर पड़ी। उसने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे उठा लिया।

सामने वे दोनों बदमाश बाहर की ओर खींचकर दरवाजा खोल लेना चाहते थे। उनके सामने दो छोटी लड़कियाँ मुकाबले पर थीं तो उन्हें यह कोई मुश्किल काम नहीं दिखाई दे रहा था। उनके हाथों में हथियार थे तो मुकाबले में अब नन्हीं लिंगखोई के पास भी हथियार आ चुका था। उसने दाओ को दोनों हाथों से पकड़ा और पूरी ताकत से सामने वाले बदमाश पर वार कर दिया। अचानक हुए इस हमले से बचने के लिए उसने अपने हाथ सामने कर दिए। बस पूरी ताकत से हुए उस पैने दाओ के वार ने अपने सामने आई उस बदमाश की अँगुलियों को काट दिया।

अँगुलियों के कटते ही वह बदमाश दर्द से बिलबिलाने लगा उसका हाथ ढीला पड़ा और लिंगखोई ने दरवाजा बन्द कर लिया। उधर एस. के. जाना भी बाहर निकलकर लोगों से मदद माँगने के लिए चिल्लाने लगे। उधर कमरे में दरवाजा बन्द करके लिंगखोई, उसकी माँ और बहन ने भी मदद के लिए जोर–जोर से शोर मचाना शुरू कर दिया। घायल बदमाशों ने समझ लिया कि अब और ज्यादा देर वहाँ रुकना उनके लिए नुकसानदेह होगा। इस शोर को सुनकर पड़ोसी आ गए तो वे पकड़े जाएँगे और पुलिस तक पहुँचने से पहले गाँव वाले पीट–पीटकर उनका कचूमर बना देंगे।

उनमें से एक तो बुरी तरह अँगुलियाँ कटने से घायल हो चुका था। इसलिए वे दोनों वहाँ से सिर पर पैर रखकर भाग लिए। इस तरह तेरह साल की लिंगखोई ने अपनी हिम्मत और हौसले के बल पर बदमाशों का सामना किया और उन्हें उल्टे पाँव भागने के लिए मजबूर कर दिया। जब गाँव के लोग आए और उन्होंने उन बदमाशों के साथ घटी घटना की पूरी बात सुनी तो वे भी लिंगखोई के साहस की तारीफ किए बिना न रह सके।

लिंगखोई का नाम वर्ष 2003 के बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। वर्ष 2004 में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राजधानी दिल्ली में देश के प्रधानमन्त्री द्वारा लिंगखोई को राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

रंग भरकर देखो

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी

विस्मयकारी भारत-11

हमारे देश में स्थित मन्दिर या तो देवी-देवताओं के नाम से जाने जाते हैं या फिर सेठ-साहूकारों के नाम से परन्तु तेलंगाना के मुलुगु ज़िले से 15 किमी. दूर एक छोटा-सा गांव है पालमपेट।
यहां 13 वीं शताब्दी में निर्मित रामप्पा टेम्पल विश्व का अनोखा ऐसा मन्दिर है जिसको परम्परा से हटकर इसके वास्तुशिल्पी रामप्पा के नाम से प्रसिद्धि मिली हुई है, हालांकि इसे काकतीय रुद्रेश्वर मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है।

. राजे-महाराजाओं द्वारा बनवाई गईं धूप घड़ियाँ तो आपने बहुत देखी-सुनी होंगी पर बिहार में सासाराम के पास रोहतास ज़िले के डेहरी नगर में सरकारी विभाग द्वारा बनवाई गयी, धूप से समय बताने वाली, एक ऐसी घड़ी है जो है तो सन 1871 की, पर आश्चर्य है कि यह आज भी बिलकुल सही समय बताती है।

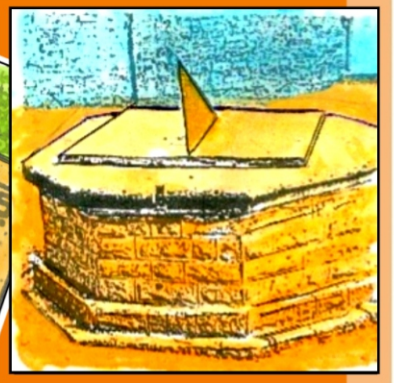

गंगा शार्क के नाम से जानी जाने वाली यह मछली, शार्क प्रजाति की है जो हमारे देश की पावन गंगा नदी में ही पायी जाती है।

मध्य प्रदेश के कटनी रेलवे स्टेशन पर 45 कुलियों के बीच उनके कंधे से कंधा मिलाकर सामान ढोनेवाली संध्या मरावी नाम की एक अकेली महिला कुली दिखाई देती है।
तीन बच्चों की 34 वर्षीया इस माँ ने अपने पति की मृत्यु के बाद बच्चों और बूढ़ी सास के लालन-पालन हेतु एक ऐसा क्षेत्र चुना जिसमें इससे पहले तक केवल मर्दों का ही वर्चस्व था।
अब तो शायद ही कोई कार्यक्षेत्र बचा हो जहां महिलाओं ने अपनी लगन, बुद्धि व परिश्रम से अपने पांव न जमा लिए हों।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

© qvashim@gmail.com/ 0 8077554501

बाँटी खुशियाँ

सावन को बाल दिवस का बड़ी बेसब्री से इन्तजार रहता था। इस दिन वह बहुत मस्ती करता था। बाल दिवस पर उसे कोई डाँटता भी नहीं था। स्कूल और घर दोनों जगह वह खूब मस्ती करता। उसे बाल दिवस का मतलब 'मस्ती का दिन' यही समझ आता था। दादाजी ने सावन को बड़ा खुश और उछलते–कूदते देखा तो उन्होंने पूछा– "क्या बात है सावन। आज बड़े खुश हो। हमें भी तो बताओ।"

"अरे दादाजी। कल बाल दिवस है। इसीलिए मैं बहुत खुश हूँ। बाल दिवस के दिन स्कूल में खूब मस्ती होती है। डांस होता है। इस बार हमारे स्कूल में फैंसी ड्रेस कम्पीटीशन भी है। इस बार मैं नेहरू जी बनकर जाऊँगा।" सावन ने एक ही साँस में सारी बातें बता दी। "अच्छा तो ये बात है। क्या तुमने नेहरू जी बनने के लिए सारे कपड़े तैयार कर लिये हैं?" दादाजी ने प्यार से पूछा।

"हाँ। कुर्ता, पाजामा, ब्रेस्कोट सभी तैयार हैं।" सावन ने कहा। "मुझे लगता है तुम एक चीज भूल रहे हो।" दादाजी बोले। "कौन सी चीज? यही तो चाहिए नेहरू जी बनने के लिए। यही सब तो पहना करते थे, नेहरू जी।" सावन सोचते हुए बोला। "नेहरू जी अपनी कोट या ब्रेस्कोट में हमेशा लाल गुलाब लगाया करते थे। तुमने लाल गुलाब की व्यवस्था की है क्या?" दादाजी ने पूछा। "लाल गुलाब। अरे, वो तो है ही नहीं। पर दादाजी नेहरू जी लाल गुलाब क्यों लगाया करते थे।" सावन ने उत्सुकता से पूछा।

दादाजी ने बताते हुए कहा– "लाल गुलाब नेहरू जी को बहुत पसन्द था। वे बच्चों को भी लाल गुलाब की तरह सुकोमल और सुन्दर मानते थे। जिस तरह गुलाब सुगंध छोड़ता है, ठीक वैसे ही बच्चे भी हमारे समाज और देश को सुगन्धित करते हैं। वो हमेशा बच्चों के पास तो रह नहीं सकते थे। इसीलिए वो लाल गुलाब हमेशा अपनी कोट पर लगाया करते थे।"

"अच्छा तो ये बात है। नेहरू जी बच्चों से इतना प्यार करते थे।" सावन बोला। "हाँ। बहुत ज्यादा प्यार करते थे। तभी तो उन्होंने अपना

जन्मदिन 14 नवम्बर को बाल दिवस के रूप में मनाने का आग्रह किया। इसीलिए हम नेहरू जी के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाते आ रहे हैं। बच्चे भी नेहरू जी को बहुत ज्यादा प्यार करते थे। बच्चे उन्हें चाचा कहकर बुलाते थे।" दादाजी ने बताया। "ये तो बड़ी महत्त्वपूर्ण बात बताई आपने। मुझे ये सब पता नहीं था। दादाजी मैं कल सुबह बगीचे से लाल गुलाब तोड़कर कोट पर लगा लूँगा।" सावन ने कहा। "ये ठीक रहेगा। बिना गुलाब के नेहरू जी का पूरा लुक नहीं आ पायेगा।" दादाजी ने कहा। "ठीक है, दादाजी।" ये कहता हुआ सावन बाहर खेलने चला जाता है।

अगले दिन बाल दिवस की सुबह सावन बगीचे से लाल गुलाब तोड़ता है। तभी उसकी नजर सड़क के किनारे कूड़ा उठाते बच्चों पर पड़ती है जो सर्दी में भी फटे कपड़े पहने हुए थे। उनको देखकर उसे बहुत ज्यादा बुरा लगता है। वह मन ही मन सोचता है– "इनकी दशा को देखकर जरूर चाचा नेहरू को भी बुरा लगा होगा। क्या इन्हें बाल दिवस मनाने का अधिकार नहीं है?"

वह अभी ये सब कुछ सोच ही रहा था, तब ही उसकी मम्मी आवाज देती है कि स्कूल के लिए देर हो रही है। सावन गुलाब लेकर जल्दी से अन्दर जाता है और तैयार हो जाता है। वह बिलकुल चाचा नेहरू जैसा लग रहा था। स्कूल के फैंसी ड्रेस कम्पीटीशन में सावन फर्स्ट आया। उसे इनाम भी मिला। वह बहुत खुश था। घर आने के बाद उसने सारी बातें दादाजी को भी बतायी। दादाजी ने उसे बधाई दी।

लेकिन अभी भी बार–बार उसे वे बच्चे याद आ रहे थे जिन्हें उसने सुबह देखा था। वह दादाजी को उन बच्चों के बारे में बताता है और कहता है– "दादाजी क्या हम उन बच्चों की कोई मदद कर सकते हैं?" "हाँ क्यों नहीं? तुम्हारे कुछ कपड़े हैं जो छोटे हो चुके हैं। जिन्हें मम्मी ने धोकर अलमारी में रखा है। तुम उन्हें उन बच्चों को दे सकते हो।" दादाजी ने सुझाव दिया।

सावन ये सुनकर बहुत खुश हुआ। वह मम्मी से बच्चों के लिए कपड़े माँगता है। मम्मी भी सावन के इस दया भाव से बहुत खुश हुई। वह उसे कपड़े देती हैं। सावन दादाजी के साथ उन बच्चों को कपड़े बाँटने गया। बच्चे कपड़े पाकर बहुत खुश हुए। सावन ने उन सबको हैप्पी चिल्ड्रन'स डे कहा। बच्चे उसकी ओर देखकर मुस्कुराने लगे।

ललित शौर्य
मुवानी पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है,
इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

		6						8
5				6	7	9		
		9	2	8		3	6	
	4				3			
2		3		1		8		5
			6				3	
	1	8		3	2	6		
		4	1	7				3
7						1		

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

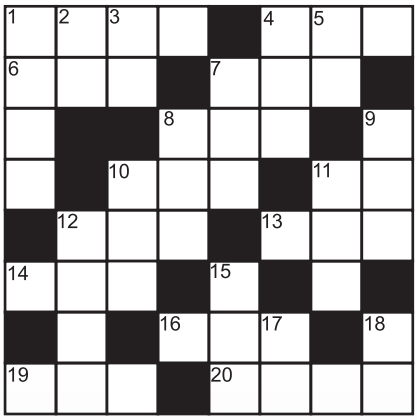

बाएँ से दाएँ

1. काशी, वाराणसी (4)
4. राजा, नरेश (3)
6. जुड़ाव, मोह (3)
7. वस्तु क्रय करने का स्थान (3)
8. बड़ा (3)
10. सर्दी में ओढ़ने का साधन (3)
11. कौआ, वायस (2)
12. दीया, चिराग (3)
13. गायन की एक शैली (3)
14. समतल, एकसा (3)
16. हिन्दुस्तान, हमारा देश (3)
19. कालीन,मोटा बिछावन (2)
20. सिंह, शेर (3)

उत्तर इसी अंक में

ऊपर से नीचे

1. कृष्ण के बड़े भाई (4)
2. अनुपस्थिति (2)
3. आवाज, नाद (2)
4. निवास स्थान (3)
5. तुच्छ, निम्न स्तर का (2)
7. फरियाद (3)
8. हास–परिहास (3)
9. अज, एक चौपाया, गरीब की गाय (3)
10. फिसलने की जगह, प्रतिवेदन (3)
11. इच्छा, अभिलाषा (3)
12. वह त्यौहार जब दीपों को कतारों में सजाते हैं (4)
15. पांडवों के 100 चचेरे भाई (3)
17. शरीर, देह (2)
18. काम, कार्य (2)

कबीर वाणी...

हमारे पास समय बहुत कम है, जो काम कल करना है वो आज करो और जो आज करना है वह अभी करो, क्योंकि पलभर में कभी भी प्रलय हो सकती है फिर आप अपने काम कब करेंगे ?

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।

दीप जले हैं

आँगन-आँगन, दीप जले हैं।
जन-जन के मन, सुमन खिले हैं।

खिल-खिल हँसती, दीप कतारें।
करती नभ को, आज इशारे।
ज्योति रश्मियाँ, मिली गले हैं...

अँधियारा देखो, छिप बैठा।
नहीं पता है, क्यों वह ऐंठा।
सबके मन के, कलुष धुले हैं...

पगडंडी हर, सजी वधू सी।
धरा आज, मुस्काती नभ सी।
गंध लुटाते, पुष्प मिले हैं।
आँगन-आँगन, दीप जले हैं।

पंकज मिश्र 'अटल'
सरभोग बरपेटा (असम)

दीवाली के दोहे

दीपक लड़ता तिमिर से, यह उसकी पहचान,
लड़ना उससे सीख लो, मिट जाते व्यवधान।

अँधियारा कितना घना, नहीं ठहरता पास,
जीत हमारी अटल है, मन में हो विश्वास।

दीवाली पर सज रही, दीपों की बारात,
हँसी-खुशी की मिल रही, सबको लो सौगात।

पूजा की थाली सजे, कुमकुम, फल, मिठाई,
हर आँगन में देख लो, बँटे प्यार-बधाई।

धूम-धड़ाके हो रहे, हँसते खूब अनार,
रंग दिखाने को खड़ी, फुलझड़ियाँ तैयार।

ऊँच-नीच का भेद सब, मिट जाये इस बार,
यही सीख बस दे रहा, दीपों का त्यौहार।

राजेन्द्र निशेश
चंडीगढ़

नाटिका

हर चमकीली चीज सोना नहीं होती

(परदा खुलने पर एक बन्दर मंच पर उछल–कूद लगाता दिखता है। कभी इधर जाता है, कभी उधर जाता है, कभी गुलाटियाँ मारता है। उसकी लम्बी–सी पूँछ है। वह पूँछ को बार–बार सहलाता है, जैसे कोई पहलवान मूँछों पर ताव दे रहा हो।)

बन्दर : मस्तमौला, मस्त कलंदर,
मैं चंचल, अलबेला बन्दर।
उछल कूदकर उधम मचाता,
सारा दिन मस्ती में गाता।
कभी लपककर चढ़ूँ पेड़ पर,
कभी खड़ा हो दीवारों पर
मस्ती में काटूँ दिन सारा,
मैं बन्दर अलबेला न्यारा।

(मंच पर इधर से उधर छलाँगे मारता है, गुलाटियाँ खाता है। अपनी दाढ़ी पर हाथ फिराता है, फिर अपनी पूँछ सहलाता है और पूँछ को चेहरे पर फिराता है)?

बन्दर : मेरी सुन्दर–सुन्दर पूँछ,
मेरी लम्बी–लम्बी मूँछ।
मेरी आँखें जैसे सेब,
मेरा ढोलक जैसा पेट...।

(पेट शब्द आते ही वह रुक जाता है और कुछ सोचने लगता है। कान पर हाथ लगाकर कुछ सुनने की कोशिश करता है।)

बन्दर : 'गुड़–गुड़–गुड़'.. 'गुड़–गुड़–गुड़'... यह आवाज कहाँ से आ रही है...? (मंच पर इधर से उधर जाता है और चौकन्ने कानों से सुनने की कोशिश करता है। तभी उसका ध्यान पेट पर जाता है। पेट में कुछ हलचल हो रही है। वह पेट की

तरफ कान लगाने की कोशिश करता है और इस कोशिश में बार–बार लुढ़कता है।)

बन्दर : (पेट पर हाथ फिराते हुए अपने आप से कहता है) अच्छा, तो यह आवाज मेरे पेट से आ रही है। सुनूँ तो यह क्या कह रहा है? (ध्यान लगाकर सुनता है।)

(पेट के अन्दर से आवाज आती है। बन्दर पेट को इस तरह हिलाता है जैसे पेट से ही आवाज आ रही हो)

कब तक गुड़–गुड़–गुड़ गाऊँ
कब तक पड़ा–पड़ा कुम्हलाऊँ
भरने का अब जतन करो या
यों ही मैं भूखा मर जाऊँ?

बन्दर : (सिर खुजाते हुए खिसियाता है) ओह, धमाचौकड़ी में यह तो मैं भूल ही गया कि मेरा ढोलक जैसा पेट बेचारा भूखा पड़ा है। मुझे इसके लिए फौरन कुछ ढूँढ़ना पड़ेगा।

(बन्दर इधर–उधर नजरें फिराता है। आँखों पर हाथ की छतरी बनाकर मंच पर कुछ ढूँढ़ने की कोशिश करता है। तभी एक किनारे टोकरी में सुन्दर और चमकीले फल रखे दिखते हैं। उसके

आओ पढ़ें : नई किताबें

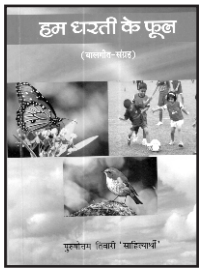

किशोरवय के बालकों के लिए रची इन कविताओं में भाषा–शैली व विषय वस्तु उनके मनोनुकूल है। शेर का जन्मदिन, बन्दर का देशाटन, हम बच्चे वीर सिपाही, नन्दन कानन की है बात, छोटा सा है गाँव हमारा, यह है भारत देश हमारा, आओ फूलों से बात करें जैसे शीर्षक बताते हैं कि इन कविताओं की भाव भूमि में विविधता, नवीनता, मौलिकता के साथ पर्याप्त रोचकता भी है। पुस्तक बालकों के लिए उपयोगी व मार्गदर्शक है।

पुस्तक का नाम : हम धरती के फूल **लेखक :** पुरुषोत्तम तिवारी 'साहित्यार्थी'
मूल्य : 200 रुपये **पृष्ठ :** 124 **संस्करण :** 2022
प्रकाशक : आईसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल (मध्य प्रदेश)

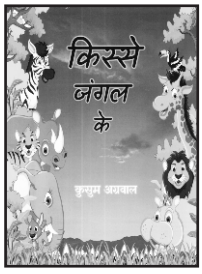

बच्चों में जंगल के प्रति एक विशेष आकर्षण होता है। वे जंगली जीव–जन्तुओं, पशु पक्षियों के बारे में बहुत कुछ जानते हैं फिर भी जब उनकी गतिविधियाँ देखने का काल्पनिक चित्र कहानी के माध्यम में उनके सामने आता है तो वे आनन्द से अभिभूत हो जाते हैं। इस पुस्तक की 20 कहानियों को पढ़ने पर ऐसा ही महसूस होता है। लेखिका ने जंगल और जीवों को आधार बनाकर नैतिक मूल्यों का संदेश देने का भी काम किया है। सुन्दर आवरण एवं चित्रों से सुसज्जित किताब बालमन को लुभा सकेगी।

पुस्तक का नाम : किस्से जंगल के **लेखक :** कुसुम अग्रवाल
मूल्य : 199 रुपये **पृष्ठ :** 80 **संस्करण :** 2022
प्रकाशक : नोशन प्रेस, तमिलनाडु

पास ही कुछ बदरंग और सूखे फल रखे हैं।)

बन्दर : (खुशी से उछलकर) आज मेरी किस्मत अच्छी है। वह देखो, सामने ढेर सारे फल रखे हुए हैं।

(बन्दर लपककर फलों के पास पहुँच जाता है।)

बन्दर : (जमीन में पड़े बदरंग फलों को ठोकर मारता है।) हुँह... इन्हें कौन खाएगा? टोकरी में इतने सुन्दर और चमकीले फल रखे हुए हैं। इन्हें खाकर तो आज मौज ही हो जाएगी। पूरी की पूरी टोकरी ही उठा लेता हूँ।

(टोकरी उठाकर भागता है और कूदते–फाँदते मंच के बीचों–बीच आकर बैठ जाता है।)

बन्दर : (टोकरी सामने रखकर पेट पर हाथ फिराते हुए) कितने सारे फल हैं...! आज इतना खाऊँगा कि पेट को हफ्ते भर गुड़गुड़ाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

(एक बड़ा–सा सेब उठाकर मुँह मारता है। मुँह मारते ही चीख पड़ा है। जैसे किसी पत्थर पर दाँत गड़ा दिए हों।)

बन्दर : (एक हाथ गाल पर रखे और एक हाथ से टूटा हुआ दाँत दिखाते हुए) मैं बाहरी चमक देखकर जिन फलों को उठा लाया, वे सब तो नकली निकले। हाय मेरा दाँत... हाय मेरा दाँत... (रोता है)

(तभी मंच के दोनों ओर से बच्चे निकल आते हैं। वे ताली बजा–बजाकर हँसते हैं। सब एक सुर में कहते हैं)

सुनो–सुनो सब राजू, मिन्नी, मुनमुन, मोती
हर चमकीली चीज सोना नहीं होती।

(बन्दर खिसियाता हुआ पूँछ समेटकर भागता है। पर्दा गिरता है)

डॉ. मोहम्मद अरशद खान
शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

बूझो तो जानें

1
प्रथम उन्हें ही पूजा जाता,
शुभ दीवाली मंगलदाता।
मुँह हाथी की सूँड समान,
लेकर नाम, लगाओ ध्यान।

2
दीप जलाकर कर लो पूजा
माँ का ध्यान धरो, हो मौन।
साफ-सफाई से खुश होती
धन समृद्धि की देवी कौन ?

3
पर्व है जगमग दीपों वाला,
कार्तिक मावस को है आता।
हम सब करते धूम धड़ाका,
जलते हैं फुलझड़ी पटाखा।

4
चार अक्षर का मेरा नाम,
जलूँ तो जगमग कर दूँ धाम।
शादी, दीवाली, त्योहार,
मेरे बिन लगते बेकार।

5
जलूँ तो सुर सुर भरता तान,
झरते सुन्दर फूल समान।
मुझे जलाकर हट जाएँ,
नाम से फल, न खा पाएँ।

गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

बीज और पेड़

रोपा था जो बीज, आज
धीरे-धीरे अंकुराया।
अंकुर से दो पत्ते फूटे,
विकसी उसकी काया।

बढ़ते-बढ़ते मुख्य पिंड से,
कुछ शाखाएँ झाँकी।
पत्तों से लद गई, छटा थी
सचमुच उसकी बाँकी।

एक साल का होते-होते,
फूल लग गये खिलने।
तितली, भौंरे दूर-दूर से,
आये उनसे मिलने।

बना बीज से पेड़, फूल फिर
फल की बारी आयी।
तरुवर की छवि में आकर्षण,
देने लगा दिखाई।

पाकर मधुर महक चिड़ियों ने,
यहाँ पर डाला डेरा।
कलरव से गूँजित, हर दिन का
होने लगा सवेरा।

अश्वनी कुमार पाठक
सिहोरा (मध्य प्रदेश)

इस दीवाली में

खूब करेंगे धूम धड़ाका, इस दीवाली में।
जब आएँगे चुन्नू काका, इस दीवाली में।

हम अनार दो चार लाएँगे,
बाकी फुलझड़ियाँ,
नहीं चलेंगे बम पटाखा,
इस दीवाली में।

झुग्गी झोपड़ियों के बच्चे,
आमन्त्रित होंगे,
बाँटेंगें हम खीर बताशा,
इस दीवाली में।

बिजली की लड़ियों के बदले,
दुनिया देखेगी,
बच्चा-बच्चा दीप जलाता,
इस दीवाली में।

हट जाएँ सब दुःख के बादल,
यही सोच अपनी,
खुल जाये खुशियों का खाता,
इस दीवाली में।

अंधियारों पर रोशनियों से,
हमको लिखनी है,
दीवाली की नई परिभाषा,
इस दीवाली में।

प्रभुदयाल श्रीवास्तव
छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश)

बदलाव की बयार

घर में दीपावली की तैयारियाँ चल रही थी। मम्मी पूरे घर की साफ–सफाई में व्यस्त थी। साथ ही साथ वह दीपावली के लिए खरीदे जाने वाले सामानों की भी सूची बना रही थी। सुमित की खुशी की कोई सीमा ही नहीं थी। आज से उसके स्कूल की चार दिन की छुट्टी हो गई थी। वह दीपावली के त्यौहार को अपने मित्रों के साथ खूब धूमधाम से मनाना चाहता था इसलिए वह भी स्कूल से आकर पटाखों की लिस्ट बनाने लगा।

"सुमित, दीपावली पर तुम्हें क्या–क्या चाहिये।" आफिस से आकर पापा ने उससे पूछा। "पापा, मैंने अपनी लिस्ट बना ली है।" सुमित ने अपनी लिस्ट उनके सामने रखते हुए कहा। "बेटा, इतनी लम्बी लिस्ट... क्या तुम इतने पटाखे एक दिन में छुड़ा पाओगे?" पापा ने आश्चर्य से पूछा। "पापा, मेरी लिस्ट तो बहुत छोटी है, मेरे दोस्तों की इससे भी लम्बी है।"

मम्मी ने समझाया–"बेटा, हमें पटाखे अधिक नहीं छुड़ाने चाहिए। पटाखे छुड़ाने से हमारा वायुमंडल प्रदूषित होता है। हम जिस हवा में साँस ले रहे हैं, उसमें पहले से ही जहरीली गैसें हैं अगर हम पटाखे छुड़ायेंगे तो वायुमंडल का प्रदूषण और बढ़ जाएगा।" मम्मी ने कहा। "आप ही तो कहती हैं कि दीपावली के दिन पटाखे छुड़ाना शगुन होता है। वायुमंडल... जहरीली गैसें मैं कुछ समझा नहीं।"

"बेटा, पहले पटाखे इतना प्रदूषण नहीं फैलाते थे। अब ज्यादा आवाज और रंगीन रोशनी के लिए पटाखे बनाने में ऐसे तत्व मिलाये जाने लगे हैं जिनसे कार्बन डाइऑक्साइड और कार्बन मोनो ऑक्साइड जैसी अनेक जहरीली गैसें निकलती हैं जो मनुष्यों के लिए ही नहीं, जीव–जन्तुओं के लिए भी नुकसानदेह हैं।" "अगर पटाखे छुड़ाना इतना ही नुकसानदायक है तो पटाखे बनने ही क्यों शुरू हुए?" सुमित ने प्रश्न किया।

"बेटा, जिसने भी इन्हें पहली बार बनाया होगा वह इनके दुष्परिणामों को नहीं जानता होगा। वैसे भी उस समय लोग भी कम थे। पेड़–पौधे ज्यादा थे जो पटाखों से निकलती इन हानिकारक गैसों को सोख लिया करते थे। अब जनसंख्या भी बढ़ गई है, जंगल कट गए हैं इसलिए प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।" मम्मी ने कहा।

"मम्मी, एक दिन में क्या हो

जाएगा? आप कहती हैं तो जो सूची मैंने बनाई है उसमें से रॉकेट बम, अनार का एक पैकेट कम कर देता हूँ पर दीपावली पर पटाखे छुड़ाने से तो मत रोकिए।" सुमित के स्वर में आग्रह था। "ठीक है बेटा लेकिन पटाखे सावधानी से छुड़ाना।" "मम्मी, अब मैं बच्चा नहीं हूँ। अगले महीने दस वर्ष का हो जाऊँगा।" "अच्छा! पर खाना खाने में तो अभी भी तुम्हारे नखरे हैं। मैं यह नहीं खाऊँगा, वह नहीं खाऊँगा। फल सब्जी तो तुम खाते नहीं हो, बस चॉकलेट और मैगी, इससे शरीर कैसे मजबूत होगा?" मम्मी ने कहा। "मम्मी, अब मैं फल सब्जी भी खाऊँगा पर मुझे पटाखे चाहिए वरना मेरे दोस्त मुझे चिढ़ायेंगे।"

दूसरे दिन वे लोग दीपावली की खरीददारी के लिये गये। सबसे पहले मम्मी–पापा ने सुमित के लिए नए कपड़े खरीदे। बाहर बरामदे में लगाने के लिए कंदील खरीदी। मिठाई में उसकी पसन्द की काजू कतली के साथ, बूँदी के लड्डू भी खरीद लिये। पूजा के लिए गणेशजी और लक्ष्मीजी की मूर्ति, खील, बताशा, दिया इत्यादि लेने एक दुकान के सामने उतरने लगे तो पापा ने कहा– "मैं गाड़ी में बैठा हूँ, तुम लोग जल्दी से सामान खरीदकर आ जाओ। यहाँ पार्किंग की समस्या है।" पापा गाड़ी में ही बैठे रहे जबकि सुमित मम्मी के साथ दुकान पर गया। मम्मी ने पूजा के लिये लक्ष्मीजी–गणेशजी की एक मूर्ति पसन्द की... "मम्मी, ये वाली लो न, देखो कितनी अच्छी लग रही है।" सुमित ने एक मूर्ति की ओर इशारा करते हुए कहा।

"बेटा, इस मूर्ति में अनेक रंग हैं जब इसे नदी में विसर्जित करेंगे तो पानी दूषित हो जाएगा फिर नदियों में रहने वाले जन्तुओं को परेशानी होगी। उनकी मृत्यु भी हो सकती है। मिट्टी की बनी इस मूर्ति को अगर नदी में विसर्जित करेंगे तो यह मिट्टी की होने के कारण पानी में घुलकर नीचे बैठ जाएगी। किसी को नुकसान नहीं होगा। बेटा, अगर हमें अपना पर्यावरण बचाना है तो हमें स्वयं में बदलाव लाना होगा।" मम्मी ने अपनी पसन्द की हुई मूर्ति को दिखाते हुए उसे समझाया।

"आप ठीक कह रहीं हैं मम्मी, मुझे पटाखे भी नहीं छुड़ाने चाहिए। आप कह रही थीं कि पटाखे छुड़ाने से वायुमंडल प्रदूषित होता है। पिछली दीपावली पर दादाजी हमारे घर आए हुए थे। पटाखे के धुएँ की वजह से दादाजी को कितनी परेशानी हुई थी। दादाजी की साँस फूलने के कारण पापा को उन्हें तुरन्त अस्पताल ले जाना पड़ा था।" सुमित ने पिछली दीपावली पर घटी घटना को याद करते हुए कहा।

"तुम सच कह रहे हो बेटा, हम दूसरों को तो नहीं समझा सकते पर स्वयं अच्छी आदतें अपनाकर एक अच्छा उदाहरण तो पेश कर ही सकते हैं। शायद धीरे–धीरे दूसरे भी इस बात को समझने लगें तथा वायु प्रदूषण के साथ ध्वनि प्रदूषण पर भी कुछ हद तक रोक लग जाए।" "चलो, अब सुमित को पटाखे खरीदवा दें।" उनकी बातों से बेखबर सामान के साथ उन्हें गाड़ी में बैठते देखकर पापा ने कहा।

"पापा मुझे पटाखे नहीं खरीदने।" सुमित अचानक बोला । "क्यों क्या हुआ? कल तो तुमने इतनी बड़ी लिस्ट बनाई थी।" "पापा, हमें अपने वायुमंडल को प्रदूषित नहीं करना चाहिए।" "इतना ज्ञान अचानक कैसे?" पापा ने मुस्कराकर कहा। "मम्मी ने बताया।" कहकर उसने अपनी और मम्मी के बीच हुई सारी बात बता दीं।

"अरे, बिना पटाखों के दिवाली कैसी? चलो थोड़े से ग्रीन पटाखे खरीद लेते हैं।" "ग्रीन पटाखे!" "हाँ बेटा, ग्रीन पटाखे कम प्रदूषण फैलाते हैं।" "पर प्रदूषण तो फैलाते हैं न। मुझे पटाखे नहीं चाहिए पापा।" "ओ.के. बेटा! अब घर चलें, तुम्हारी शॉपिंग हो गई हो तो।" पापा ने मम्मी से पूछा। "हाँ, अब घर चलते हैं।"

"मम्मी, दीपावली मनाई क्यों जाती है?" कार के चलते ही सुमित ने पूछा। "बेटा, भगवान राम जब रावण को मारकर, रावण की कैद से सीताजी को आजाद कराकर अयोध्या लौटे थे तब अयोध्या के लोगों ने उनका स्वागत घी के दीपक

जलाकर किया था। इसी खुशी में आज भी दीपावली मनाई जाती है। बेटा, दीपावली शब्द 'दीप' और 'अवली' शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है 'दीपों की कतार'।"

"अच्छा, इसीलिए दीपावली वाले दिन घर में खूब सारे दीपक जलाकर खुशियाँ मनाई जाती हैं।" सुमित ने कहा। "हाँ बेटा, दीपावली को 'दीप पर्व' अर्थात् अंधकार पर प्रकाश की विजय का पर्व भी कहा जाता है।" "बेटा, दीपावली को बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व भी कहा जाता है क्योंकि इसी दिन राजा राम ने रावण रूपी बुराई को मारकर अच्छाई को जीत दिलवाई थी।" अब तक चुप बैठे पापा ने कहा।

"पापा, आप कह रहे हैं दीपावली इसलिए मनाई जाती है क्योंकि इस दिन रामजी ने रावण रूपी बुराई को मारकर अच्छाई को जीत दिलवाई थी फिर हम इस दिन लक्ष्मी गणेशजी की पूजा क्यों करते हैं, रामजी की क्यों नहीं?" "बेटा, लक्ष्मी जी को धन की देवी कहा जाता है जबकि गणेश जी ज्ञान और बुद्धि के प्रतीक हैं। रामचन्द्र जी ने अपने ज्ञान और बुद्धि का प्रयोग करके विजय प्राप्त की थी तथा अयोध्या लौटकर अयोध्या के लोगों के जीवन में सुख और समृद्धि का संचार किया। दीपावली के दिन लक्ष्मी–गणेश जी की पूजा करके हम ज्ञान और बुद्धि की कामना के साथ धन की भी कामना करते हैं जिससे हमारा जीवन भी सुख, समृद्धि से भर जाए।"

"यह तभी होगा न जब हम खूब पढ़ेंगे, हैं न मम्मी।" "वाह! मेरा बेटा तो बहुत समझदार हो गया है।" मम्मी ने कहा। "मेरा नहीं हमारा।" पापा ने गाड़ी पार्क करते हुए कहा। सुमित घर जाते हुए सोच रहा था कि अब वह भी जिम्मेदार नागरिक बनेगा। पटाखे न छुड़ाने के लिए उसके दोस्त चिढ़ाएँगे तो वह मम्मी द्वारा बताई बात बताकर उन्हें भी रोकेगा। दीपावली खुशियों का त्योहार है किसी को कष्ट हो, कोई नहीं चाहेगा।

सुधा आदेश
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

बच्चों का प्रिय दिवस

बाल दिवस शुभ बाल दिवस
बच्चों का प्रिय बाल दिवस,
धूमधाम से मना रहे
सारे बच्चे बाल दिवस।

नेहरू चाचा का यह दिन
ले आता खुशियाँ अनगिन,
हम हैं वे प्यारे गुलाब
रह न सकोगे जिनके बिन।

आज करें प्रण पढ़ने का
नया सूर्य नित गढ़ने का,
प्रतिभा का जौहर दिखला
सर्वोच्च शिखर पर चढ़ने का।

आज नये संकल्प करें
दीन-दुःखी के कष्ट हरें,
जहाँ तिमिर की घटा घिरे
ज्योति के वहाँ दीप धरें।

भगवती प्रसाद द्विवेदी
पटना (बिहार)

एशियाई खेल 2022 : भार

19th Asian Games
Hangzhou 2022

जिस तरह ओलम्पिक खेल पूरी दुनिया के लिए आयोजित होते हैं, उसी तरह एशियन गेम्स यानी एशियाई खेल केवल एशिया में स्थित देशों के लिए ही आयोजित होते हैं। इन खेलों में ओलम्पिक कॉन्सिल ऑफ एशिया के सदस्य देश ही भाग ले सकते हैं। यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा खेल उत्सव है।

हर 4 वर्ष बाद एशियाई खेलों का आयोजन किया जाता है। ओलम्पिक की तरह एशियाई खेल भी किसी देश के शहर में आयोजित होते हैं। खास परिस्थितियों में कुछ खेलों को दूसरे राज्यों में भी आयोजित किया जाता है। अब तक एशिया के नौ देशों में एशियाई खेलों का आयोजन हो चुका है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दुनिया के नक्शे पर बहुत सारे एशियाई देश स्वतन्त्र देश के रूप में उभरे। ऐसे में सन 1948 के लंदन ओलम्पिक के दौरान चर्चा की गई कि एशियाई देशों के लिए भी एक खेल उत्सव का आयोजन किया जाए।

इसी को ध्यान में रखते हुए एशियाई एथलेटिक फेडरेशन का गठन किया गया और इसी संस्था द्वारा प्रथम एशियाई खेलों का आयोजन भारत की राजधानी नई दिल्ली में सन 1951 में हुआ। 1951 से लगातार इन एशियाई खेलों का आयोजन हो रहा है और अब तक एशिया के 46 देशों ने इन खेलों में भाग लिया है।

भारत और एशियाई खेल

प्रथम एशियाई खेलों में तब 11 देशों ने भाग लिया था और 6 खेलों की 57 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। इसमें भाग लेने वाले खिलाड़ियों की संख्या 489 थी। इसके बाद नई

त ने बनाया कीर्तिमान

❖❖ चीन ने इन खेलों में अब तक 3570 पदक जीते हैं। इनमें स्वर्ण 1674, रजत 1105 और कांस्य 791 हैं। विशेष बात यह है कि चीन ने 1982 से ही इन खेलों में भाग लेना शुरु किया। केवल भारत और जापान ही ऐसे देश हैं जिन्होंने सब एशियाई खेलों में भाग लिया है। अब तक केवल 9 देशों ने एशियाई खेलों का आयोजन किया है। अगले एशियाई खेल 2026 में जापान के आइची नागोया में होंगे

❖❖ महिलाओं की स्पीड स्केटिंग 3000 मीटर रेस में कांस्य पदक जीतने वाली 15 साल की संजना बथुला भारत की सबसे युवा विजेता रहीं। वहीं 65 साल के जग्गी शिवदासानी ने ब्रिज के टीम इवेंट में रजत पदक जीतकर सबसे ज्यादा उम्र में पदक विजेता बने।

दिल्ली में ही फिर से 1982 का एशियाई खेल आयोजित किया गया। इसका आयोजन 19 नवम्बर से 4 दिसम्बर 1982 तक हुआ। इसमें 23 देशों के करीब 3500 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

अभी हाल ही में चीन के हांगझोऊ शहर में 19वाँ एशियाई खेल का आयोजन किया गया। पहले ये खेल 2022 में होने थे पर कोविड के कारण इनका आयोजन 2023 में हुआ। फिर भी आधिकारिक रूप से ये खेल ''एशियाई खेल 2022'' ही कहे जाएँगे। यह खेल 23 सितम्बर से 8 अक्टूबर 2023 तक चले। इसमें 45 देशों के करीब 12000 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

भारत 107 पदक जीत कर चौथे स्थान पर रहा जिनमें 28 स्वर्ण पदक, 38 रजत पदक और 41 कांस्य थे। भारत ने इन खेलों के इतिहास में पहली बार सौ से ज्यादा पदक जीते। भारत ने 655 एथलीटों के साथ चाइना के हांगझोऊ में एशियन गेम्स 2022 में हिस्सा लिया। कई खेलों में

भारत का प्रदर्शन शानदार रहा। क्रिकेट के पुरुष और महिला दोनों वर्गों में भारत को स्वर्ण पदक मिला।

भारत ने एथलेटिक्स में 6 स्वर्ण, 14 रजत और 9 कांस्य के साथ सबसे अधिक 29 पदक जीते। भाला फेंक में नीरज चोपड़ा सफलतापूर्वक अपने खिताब का बचाव करके दोबारा स्वर्ण जीतने में कामयाब रहे। इस बीच, तीरन्दाजी कम्पाउंड टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पाँच स्वर्ण पदक जीतकर कीर्तिमान बनाया।

कबड्डी की महिला और पुरुष टीमों ने भी स्वर्ण पदक अपने नाम किए, जबकि पुरुष हॉकी टीम के स्वर्ण पदक जीतकर पेरिस 2024 ओलम्पिक में अपना स्थान सुरक्षित किया। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी सात्विक साईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने एशियन गेम्स 2023 में पुरुष युगल के फाइनल मैच में जीत दर्ज करके भारत के लिए एशियाई खेलों के इतिहास में देश का पहला बैडमिंटन स्वर्ण पदक हासिल किया। भारत ने स्क्वैश में दो और टेनिस और घुड़सवारी में एक–एक स्वर्ण पदक जीते।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

खरगोश

- खरगोश को खरहा और शशक भी कहते हैं। अँग्रेजी में इसे Hare कहते हैं। खरगोश, अंटार्कटिका को छोड़कर प्रत्येक महाद्वीप पर पाए जाते हैं।
- खरगोशों की पहचान मुख्यतः दो रूपों में होती है– (1) जंगली खरगोश एवं (2) पालतू खरगोश।
- खरगोश उर्दू भाषा का शब्द है, खर अर्थात् खच्चर और गोश का अर्थ कान अर्थात् खच्चर के जैसे कानों वाला जीव, खरगोश। खरगोश के कान बड़े–बड़े होते हैं। उसे हाथों में उठाना हो तो कान से पकड़ कर ही उठाते हैं।
- बहुत सुन्दर, बहुत प्यारा, रुई का गोला जैसा होता है खरगोश! लाल सुर्ख आँखें भी कमाल की होती हैं, छोटे–बड़े सबका प्यारा होता है। सब इसे गोद में उठाए फिरते हैं।
- खरगोश लेपोरिडी (Laporidi) परिवार का सदस्य है। सम्पूर्ण विश्व में इसकी 8 प्रजातियाँ पाई जाती है। खरगोश, जंगलों, घास के मैदानों, मरुस्थल तथा पानी वाले इलाकों में रहते हैं।
- खरगोश हर काम नियोजन बद्ध तरीके से करता है। वह अपने मस्तिष्क में एक नक्शा तैयार करता है, फिर उसमें परिवर्तन नहीं करता।
- उत्तम क्वालिटी का प्रसिद्ध ऊन अंगोरा (Angora) खरगोश से प्राप्त होता है।

डॉ. बानो सरताज
यवतमाल (महाराष्ट्र)

चित्रशाला

काव्या बछावत
कक्षा 8, बीकानेर

महक प्रज्ञा बोथरा
कक्षा 9, दिल्ली

अर्चिता तातेड़
कक्षा 8, कोलकाता

दस सवाल दस जवाब

(1) इन चित्रों में जिन संस्थानों के लोगो है, उनके पूरे नाम बताओ।

(2) नेशनल डेयरी रिसर्च इन्स्टीट्यूट कहाँ स्थित है?

(3) कटक (उड़ीसा) में स्थित सेन्ट्रल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में किसका अनुसंधान किया जाता है?

(4) इसरो की स्थापना कब व कहाँ हुई?

(5) फोरेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट कहाँ स्थित है?

(6) राष्ट्रीय प्रयोगशालाएँ एवं संस्थान किस मन्त्रालय द्वारा नियन्त्रित व निर्देशित होते हैं?

(7) डिफेन्स फूड रिसर्च लेबोरेटरी मैसूर की स्थापना किसने की?

(8) हिन्दुस्तान एन्टीबॉयोटिक्स का उत्पादन कहाँ होता है?

(9) सतीश धवन अन्तरिक्ष केन्द्र का मुख्य कार्य क्या है?

(10) 'विज्ञान प्रगति' पत्रिका का प्रकाशन किस संस्थान द्वारा किया जाता है?

उत्तर इसी अंक में

- एक शरारती लड़के ने आम के बाग में जब माली को आते देखा तो तुरन्त खड़ा हो गया। माली उसके पास आया और पूछा – ''ये हाथ में आम लेकर पेड़ के नीचे क्यों खड़े हो?''

  लड़का– जी मैं ये सोच रहा था कि किसी तरह से पेड़ पर चढ़ जाऊँ और इस आम को जहाँ का तहाँ लगा दूँ।

- ग्राहक वेटर से– देखो इस खाने में मक्खी निकली है। बुलाओ तुम्हारे मैनेजर को।

  वेटर– जी, वो तो पड़ोस के होटल में खाना खाने गये हैं।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

कर्त्तव्य का पालन ही चित्त की शान्ति का मूल मन्त्र है।

❖

नम्रता पत्थर को भी मोम कर देती है।

❖

आशा उत्साह की जननी है।

❖

विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला।

❖

विश्वास प्रेम की सीढ़ी है।

– मुंशी प्रेमचन्द

बूझो

पहेली कविता

बच्चों के चाचाजी प्यारे
चेहरे पर मुस्कराहट धारे।
बन्द कोट में फूल गुलाबी
देखो इनकी शान नवाबी।

दिवस नवम्बर चौदह आता
बच्चा-बच्चा इसे मनाता।
जिनका जन्म दिवस कहलाता
वे आधुनिक भारत निर्माता।

जब हमने आजादी पाई
खुद अपनी सरकार बनाई।
सत्ता जिसके हाथ थमाई
वो बापू के छोटे भाई।

मोती का वो लाल निराला
आजादी का भी मतवाला।
बैठ सलाखों के पीछे भी
खोज एक भारत को डाला।

इंजी. आशा शर्मा, बीकानेर (राजस्थान)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

मैं तुलसी घर-आँगन की

यहाँ–वहाँ–कहाँ देख रहे हो? मैं यहाँ हूँ, इस कोने में! हाँ! इस तरफ चले आओ, मैं ही तो हूँ, 'तुलसी'। घर–घर के आँगन की। अब तुम यह मत पूछना कि– ''आँगन क्या होता है? कभी दादी या नानी से पूछना वह बताएँगी कि उनके जमाने में आँगन कितने बड़े व साफ–सुथरे रहते थे। ऐसे ही बड़े आँगन में मिट्टी के बड़े चबूतरे पर हमारे हरे–भरे पौधे बारहों महीने लहलहाते रहते थे। अब आँगन नहीं रहे, तो हम गमलों में छतों पर भी अपनी जड़ें समेट कर किसी तरह फल–फूल रहे हैं।

तुम इतने पास आ ही गए हो तो गौर से देखो! हमारा कोई मुख्य तना नहीं होता। जैसा कि बैगन, टमाटर आदि में होता है। हमारी जड़ के तुरन्त ऊपर से ही कई शाखाएँ एक साथ निकलती हैं। बिलकुल सही सोचा तुमने, वनस्पति विज्ञान की भाषा में हम शाक या वृक्ष नहीं हैं। हम 'झाड़ी' कहलाते हैं।

अब ऊँचाई के बारे में क्या कहें? हमारे पौधों की ऊँचाई एक फीट से तीन फीट तक हो सकती है। एक बात और बताऊँ, हमारे कुछ पौधों की पत्तियाँ बिलकुल हरी होती हैं। ऐसी तुलसी को 'श्री तुलसी' कहते हैं। और कुछ पौधों की पत्तियाँ कुछ हल्की नीलाभ या बैगनी रंग लिये हुए होती हैं, ऐसी तुलसी को 'कृष्ण तुलसी' कहते हैं। इनके अलावा 'राम तुलसी' 'वन तुलसी' आदि भी होती हैं।

बरसात में जड़ सहित हमारे पौधों को गमलों में रोपा जाता है। हमारे बीजों के अंकुरण के लिए भी यह मौसम अनुकूल होता है। सर्दियों का मौसम भी हमारी वृद्धि के लिए अच्छा मौसम है। हमारी शाखाओं के ऊपरी छोर पर तुम जो रचना देख रहे हो, वह 'मंजरी' कहलाती है। ध्यान से देखो– इस पर बिना डंठल बाले हल्के गुलाबी, नीलाभ छोटे–छोटे फूल चक्करदार क्रम में लगे हैं। यही फूल कुछ दिनों बाद काले पतले व गोल बीज में बदल जाते हैं।

पत्तियों का रंग कोई सा भी हो, उपयोग और महत्त्व लगभग समान होता है। हमारी पत्तियाँ बहुत उपयोगी हैं। सर्दी–खाँसी में चाय में डालकर तो तुमने इसका लाभ लिया ही होगा। शहद व कालीमिर्च के साथ अगर हमारी पाँच या सात पत्तियों का रस निचोड़कर चाट लें, तो

सर्दी–खाँसी व बुखार में बहुत आराम मिलता है। विटामिन 'सी' की कमी को पूरा करने में भी हमारी पत्तियाँ सहायक होती हैं।

हमारी पत्तियों का अर्क या तेल भी इतना ही उपयोगी है। अर्क में एंटीआक्सीडेंट और एंटी–बैक्टीरियल पदार्थ पाये जाते हैं। रोज हमारी कुछ पत्तियों के सेवन से स्मरणशक्ति और चेहरे की आभा भी बढ़ती है।

तुम्हारे दादा जी तो यह भी कह रहे थे कि हम जहाँ लहलहाते हैं, वहाँ हमारी तीव्र गंध के कारण रोग फैलाने वाले अनेक कीटाणु पनप ही नहीं पाते। यही कारण है कि पूजन सामग्री की थालियों में हमारी कुछ पत्तियों को सबसे ऊपर रखा जाता है। ऐसी सामग्री को पवित्र भी माना जाता है। हम भले ही आकार में छोटे हैं, लेकिन अन्य पेड़–पौधों की तरह वायु में आक्सीजन तो हम भी पहुँचाते रहते हैं।

हमारी उम्र जानना चाहते हो? अच्छा सुनो! लगभग तीन या चार साल तक ही हमारा जीवन अच्छा चलता है और हम अच्छे तरीके से फल फूल सकते हैं। उसके बाद अकसर हमारा पौधा सूखने लगता है। लेकिन सूखने पर भी हम बड़े काम की चीज रहते हैं। साधुओं के गले में तुमने एक माला देखी होगी। माला के मनके हमारी सूखी–शाखाओं से ही बनते हैं। हमारे सूख चुके भागों को जलाकर जो राख बनाई जाती है, उसे भस्म कहते हैं, उसका उपयोग भी अनेक दवाइयाँ बनाने में होता है।

हमारी खुराक कुछ खास नहीं है। काली–मिट्टी हमारी पहली पसन्द है। न हो तो दुरमट या रेतीली मिट्टी में भी हम पनप सकते हैं। स्नान के पश्चात तुम्हारी दादी और मम्मी के हाथों से एक–एक लोटा जल हमें रोज मिल जाता है, हम उसी से काम चला लेते हैं। दादी और मम्मी मुझे जल देती हैं व हमारी देखभाल करती हैं, तो मुझे बहुत खुशी मिलती है। सच्ची बात तो यह है कि यदि हम किसी भी जीव की भलाई का काम करेंगे तो निश्चित ही भगवान हमारे ऐसे कार्य से खुश होंगे। क्या कहा! फिर से कहना! 'कल से तुम भी मुझे पानी दोगे। यह सुनकर तो मेरा नाचने का मन हो रहा है।

राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव
विदिशा (मध्य प्रदेश)

व्हाट्सएप कहानी

एक पति ने अपनी गुस्सैल पत्नी से तंग आकर उसे कीलों से भरा एक थैला देते हुए कहा "तुम्हें जितनी बार क्रोध आए तुम थैले से एक कील निकाल कर बाड़े में ठोक देना।" पत्नी को अगले दिन जैसे ही क्रोध आया उसने एक कील बाड़े की दीवार पर ठोक दी। यह प्रक्रिया वह लगातार करती रही। धीरे–धीरे उसकी समझ में आने लगा कि कील ठोकने की व्यर्थ मेहनत करने से अच्छा तो अपने क्रोध पर नियन्त्रण करना है और क्रमशः कील ठोकने की उसकी संख्या कम होती गई।

एक दिन ऐसा भी आया कि पत्नी ने दिन में एक भी कील नहीं ठोकी। उसने खुशी–खुशी यह बात अपने पति को बताई। वे बहुत प्रसन्न हुए और कहा– "जिस दिन तुम्हें लगे कि तुम एक बार भी क्रोधित नहीं हुई तो ठोकी हुई कीलों में से एक कील निकाल लेना।" पत्नी ऐसा ही करने लगी।

एक दिन ऐसा भी आया कि बाड़े में एक भी कील नहीं बची। उसने खुशी–खुशी यह बात अपने पति को बताई। पति उस पत्नी को बाड़े में लेकर गए और कीलों के छेद दिखाते हुए पूछा– "क्या तुम ये छेद भर सकती हो?" पत्नी ने कहा– "नहीं जी।" पति ने उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा– "अब समझी, क्रोध में तुम्हारे द्वारा कहे गए कठोर शब्द, दूसरे के दिल में ऐसे छेद कर देते हैं, जिनकी भरपाई भविष्य में तुम कभी नहीं कर सकते।" जब भी आपको क्रोध आये तो सोचिएगा कि कहीं आप भी किसी के दिल में कील ठोकने तो नहीं जा रहे? क्रोध से हुए नुकसान को कोई भर सकता है क्या?

दिमागी कसरत

यहाँ चित्र के साथ कुछ अक्षर दिये गये हैं। आपको इन्हें आपस में जोड़ते हुए एक नये शब्द की रचना करनी है।

कीजिए कोशिश...

(1) चु + = ...

(2) अ + = ...

(3) + ह = ...

(4) सू+ = ...

(5) मा + = ...

(6) त्यो + = ...

(7) + ब = ...

(8) + ज = ...

(9) + फ = ...

(10) + ब = ...

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

मेरा देश : गाँव विशेष–11

दुनिया का सबसे अमीर गाँव मधापार

दोस्तो, गाँव का नाम सुनते ही कच्ची सड़कें, पगडंडियाँ, मैले और पुरानी फैशन के कपड़े पहने हुए लोग, खेत खलिहान, लालटेन की रोशनी में काम करते लोग या सिर पर मटका ढोती महिलाएँ नजर आ जाती होंगी। मगर आपको एक बार गुजरात के कच्छ जिले में बसे गाँव मधापार की सैर जरूर करनी चाहिए।

देश का पहला हाइटेक गाँव

इस गाँव को देखकर आपकी आँखें खुली की खुली रह जाएँगी। यह सुविधाओं के मामले में शहरों से कतई कम नहीं। हमारे देश में जब तकनीक का ज़माना आया तो सबसे पहले मधापार एक हाइटेक गाँव की शक्ल ले चुका था। कच्छ इलाके के इस गाँव की ख़ासियत अच्छे होटल, समझदार लोग, तकनीक का प्रभाव आदि थे। इस वजह से बड़ी–बड़ी बिजनेस मीटिंग कराने के लिए मधापार गाँव एक सर्वोत्तम स्थान बन गया।

सबसे अमीर गाँव

अगर आप गाँव के सभी लोगों की सम्पत्ति का ब्यौरा निकालें तो पाएँगे कि मधापार भारत ही नहीं दुनिया के सबसे अमीर गाँव की सूची में शामिल है। यहाँ की बैंकों में 5 हजार करोड़ रुपये से भी ज्यादा की रकम जमा है। करीब 7,600 घरों वाले मधापार गाँव में 17 बैंक हैं। आपको हैरानी होगी कि इन सभी बैंकों में 92,000 लोगों के 5000 करोड़ रुपये जमा है। मधापार कच्छ के मिस्त्रियों द्वारा बसाए गए 18 गाँवों में से एक है। इस गाँव में 65 प्रतिशत अप्रवासी भारतीयों की सम्पत्ति है।

इस गाँव में रहने वाले ज्यादातर लोगों के रिश्तेदार विदेश में रहते हैं जो अपने परिवार वालों को अच्छे–खासे पैसे भेजते हैं। यहाँ के कई लोग यूके, अमेरिका, अफ्रीका के अलावा गल्फ के देशों में रहते हैं। कई ऐसे भी लोग हैं, जो कई सालों तक विदेश रहने के बाद अब मधापार लौट आए हैं। गाँव में स्कूल, कॉलेज, झील, हरियाली, बाँध, स्वास्थ्य केन्द्र और मन्दिर भी हैं। गाँव में एक अत्याधुनिक गौशाला भी है।

अन्य गाँवों से अलग कैसे

आखिर मधापार गाँव भारत के पारम्परिक गाँवों से इतना अलग क्यों है? असल में मधापार गाँव के ज्यादातर लोगों ने देश के बाहर रहकर काम किया और पैसे कमाकर गाँव की तरक्की में योगदान किया। अपनी कमाई का पैसा उन्होंने गाँव में ही जमा किया। इन पैसों से गाँव में स्कूल, कॉलेज, स्वास्थ्य केन्द्र, मन्दिर, बाँध, प्रकृति का संरक्षण और झीलों का निर्माण कराया गया।

साल 1968 में लंदन में 'मधापार विलेज एसोसिएशन' नाम के संगठन की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य विदेशों में गाँव की छवि को बेहतर बनाना और लोगों को आपस में जोड़ना था। पैसा कमाने के बाद बहुत से लोग भारत वापस आ गए और गाँव में अपना कारोबार शुरू कर दिया। कृषि अभी भी मधापार का मुख्य व्यवसाय है और कृषि उपज को मुम्बई समेत देश के अन्य हिस्से में भेजा जाता है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

रॉकेट वाला अब्दुल

त्यौहारों पर कुछ लोग अपने लिए काम करने वाले लोगों को उपहारस्वरूप कुछ सामान या पैसे भी देते थे लेकिन वो सब त्यौहार के दिन ही मिलता था, उससे पहले नहीं। इसलिए उम्मीद तो थी परन्तु खुद से माँगने को अब्दुल तैयार नहीं था। इसी उठापटक में पूरा सप्ताह बीत गया और टोली के पास कुल मिलाकर तीस रुपए जमा हो गए। बड़ी शान से सब के सब दोस्त दुकान पर पहुँच गए। "पटाखे खरीदने हैं।" समवेत स्वर में सबने कहा। दुकान वाले ने फुलझड़ियाँ और कुछ पटाखे सामने रख दिए। सबने एक दूसरे की ओर देखा।

"ऐसे छोटे मोटे पटाखे नहीं, रॉकेट चाहिए रॉकेट।" अब्दुल ने सबसे आगे बढ़कर कहा। "रॉकेट तो महँगा है, तुम नहीं खरीद पाओगे।" कहकर दुकान वाला दूसरे लोगों को सामान देने लगा। "मेरे पास भी पैसे हैं। पैसे देकर ही रॉकेट खरीदूँगा। बताओ तो कितने का है रॉकेट।" अब्दुल ने ऊँची आवाज में कहा। दुकान वाला पास में आकर बोला– "पचास रुपए का एक है। पैसे हैं तो लाओ और जितने चाहो ले जाओ।" अब्दुल का चेहरा उतर गया। तुरन्त जवाब नहीं दे पाया। दुकान वाले को दूसरी ओर मुड़ते देखकर थोड़ी हिम्मत जुटाकर बोला– "तीस रुपए अभी दे सकता हूँ। बाकी के दीवाली के तुरन्त बाद देकर जाऊँगा।" दुकान वाला हँसकर बोला– "मैंने तो पहले ही कहा था, तुम ही जिद पर अड़े थे। देखो भाई हमारा भी त्यौहार है, कुछ मुनाफा हमें भी कमाना है और त्यौहार पर कोई उधारी नहीं

चलती।" दुकान वाले की दो टूक बात सुनकर बच्चे दुकान से बाहर आ गए। सबके सब मायूस थे। दूसरे बच्चों को अपने माता पिता के साथ पटाखे खरीदते हुए देख रहे थे। मगर अब्दुल कुछ सोच रहा था।

बिना कुछ कहे फिर से दुकान पर चला गया। "देखो चाचा, रॉकेट नहीं दे सकते हो तो तीस रुपए के सस्ते पटाखे दे दो।" दुकान वाला फिर से हँस पड़ा– "तुम तो रॉकेट खरीदने आए थे फिर अब सस्ते पटाखे क्यों माँग रहे हो? मेरा इतना टाइम बरबाद कर दिया।" उसने इशारा किया और दुकान पर काम करने वाला एक छोटा बच्चा पटाखे का डिब्बा उठा लाया। अब्दुल ने तीस रुपए देकर वो डिब्बा खरीद लिया। बच्चे वापस चल दिए। पटाखे मिलने की खुशी तो थी लेकिन रॉकेट नहीं खरीद पाने का मलाल भी था।

"क्यों उदास हो तुम सब? पटाखों के बारूद से मैं खुद एक रॉकेट बनाऊँगा। इस दीवाली पर रॉकेट ही चलाएँगे।" बच्चों के चेहरे पर रौनक लौट आई। सबने एक दूसरे से हाथ मिलाया और मोहल्ले के बाहर बने चबूतरे पर आकर बैठ गए। सबने मिलकर पटाखे तोड़कर बारूद बाहर निकाल लिया।

अब्दुल पिछले साल चलाया हुआ एक रॉकेट उठाकर लाया जिसे उसने सँभालकर रखा था कि उसके जैसा नया खरीदकर लायेगा। सारा बारूद उसमें भर दिया। एक पतला कागज लपेटकर उसे चिपका दिया ताकि बारूद बाहर नहीं निकल पाए। दीवाली की जगमगाहट से शहर रोशन था। गली, मोहल्ले घर, दुकान और सड़कें रोशनी से नहाए हुए थे। शाम से ही पटाखों की आवाज आनी शुरू हो गई थी। बच्चे खुश होकर आकाश में ऊँचे उठते हुए धुएँ को देख रहे थे।

एक रॉकेट था जो उस दीवाली पर सबसे अधिक ऊँचाई तक उठा था और सबसे अधिक देर तक जिसका बारूद जला था वो अब्दुल का बनाया हुआ रॉकेट था जो उसने अपने दोस्तों की मदद से बनाकर उसी चबूतरे पर बैठकर चलाया था। उस दिन किसी का ध्यान उसकी तरफ नहीं गया लेकिन सालों बाद जब उसने मिसाइल बनाई तब पूरी दुनिया ने उसे देखा और भारत के महान वैज्ञानिक को सलाम किया।

गरीब मुस्लिम बस्ती में रॉकेट बनाने वाला कोई और नहीं मिसाइल मैन डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम ही थे जिन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता और वैज्ञानिक परीक्षणों से दुनिया भर में भारत का नाम रोशन किया। कठिन परिश्रम और खुद पर भरोसा रखने से असम्भव भी सम्भव हो जाता है। धर्म कोई भी हो यदि वो मिसाइल बनाने की प्रेरणा देता है तो उससे बेहतर कौन सा धर्म है? त्यौहार किसी का भी हो अगर वो जीवन को रोशन करता है तो हर रोज उसे मना लेना चाहिए।

अर्चना त्यागी
जोधपुर (राजस्थान)

जरा हँस लो

डॉक्टर मरीज से – पिछले हफ्ते तुम अपनी याद्दाश्त तेज करने के लिए जो दवा ले गए थे, उससे कुछ फर्क पड़ा ?

मरीज– अभी तक कुछ फर्क नहीं पड़ा क्योंकि रोज दवा लेना ही भूल जाता हूँ।

माँ –पिंकी तुम्हें जन्मदिन पर सबसे अच्छा उपहार कौनसा मिला ?

पिंकी – यह बाजा।

माँ – पर यह सबसे अच्छा कैसे हुआ?

पिंकी –क्योंकि इसे न बजाने के लिए पिताजी दिन के 10 रुपये दिए जा रहे हैं।

प्रेरक प्रसंग

मैं ही दूल्हा बन सकता हूँ

अक्टूबर 1927 में मद्रास में काँग्रेस का अधिवेशन था। जवाहरलाल जी जब अन्य नेताओं के साथ वहाँ पहुँचे तो बाजे–गाजे के साथ उनका स्वागत किया गया। नेहरूजी ने पूछा– ''आज किसकी बारात निकलने वाली है?'' आयोजक जब कुछ नहीं बोला तो नेहरू जी स्वयं बोले– ''अच्छा चलो मैं ही दूल्हा बन जाता हूँ।'' और वे मुस्कुराते हुए सावधान की मुद्रा में जुलूस के आगे–आगे दूल्हे की तरह चलने लगे।

काजू उछाला और लपककर खा गए

नेहरू जी वाराणसी के किसी विद्यालय में गए। समारोह के बाद दावत हुई। नेहरू जी जहाँ बैठे थे वहाँ छात्रों की भीड़ जमा हो गई। नेहरू जी उनके साथ घुल–मिलकर हँसने–हँसाने लगे। उन्होंने काजू हाथ में लेकर छात्रों से पूछा– ''क्या तुम काजू उछाल कर खा सकते हो?'' छात्रों ने काजू उछाल कर खाने का प्रयास किया, पर असफल रहे। तब नेहरू जी ने काजू उछाला और लपक कर मुँह में ले लिया। उनको देखकर छात्र हँसते रहे और वे करामात दिखाते रहे।

मुझे पैदल चलना आता है

पंजाब के बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा समाप्त कर जब पंडित नेहरू दिल्ली लौटे तो पालम हवाई अड्डे पर हवाई जहाज पहुँचने तक उनकी कार नहीं पहुँची थी। चालक ने ऊपर ही कई चक्कर लगा लिये। जब जहाज नीचे न उतरा तो नेहरू जी ने पूछा– ''आखिर बात क्या है? जहाज नीचे क्यों नहीं उतर रहा?'' चालक बोला– ''नीचे से आदेश मिला है कि आपकी कार हवाई अड्डे पर नहीं पहुँची। जब तक कार न पहुँचे जहाज न उतारा जाए।'' ''जहाज को एकदम नीचे उतारो– मैं पैदल ही अपने घर चला जाऊँगा, तुम क्या समझते हो, मैं पैदल नहीं चल सकता?''

पूरन सरमा
जयपुर (राजस्थान)

बताओ तो जानें

ध्यान से देखकर बताइए यहाँ पर कौन–कौनसे फल और सब्जियाँ कितनी बार चित्रित किये हुए हैं?

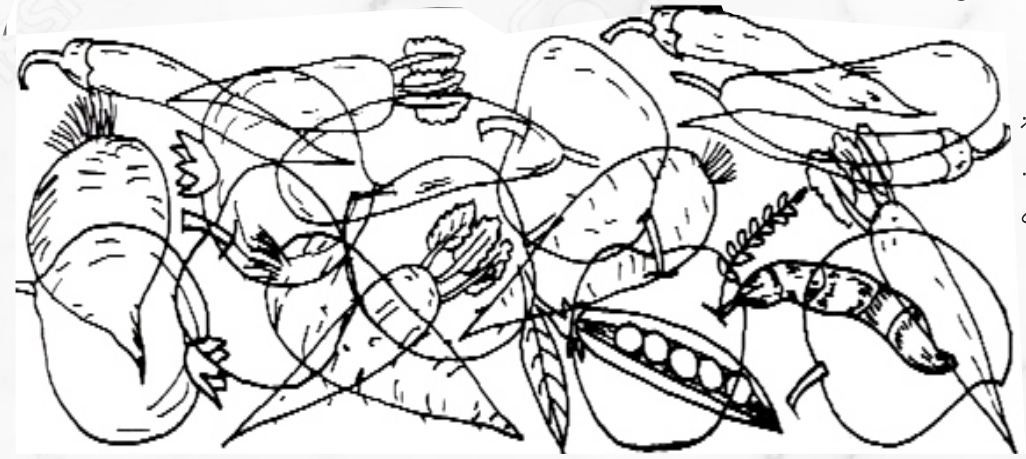

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी,मेड़ता सिटी

ताजमहल

बच्चो, ताजमहल का नाम तो आपने जरूर सुना होगा। यह सफेद संगमरमर की बनी खूबसूरत इमारत है। इसकी गिनती दुनिया के सात आश्चर्यो में होती है। इसे प्रेम का प्रतीक और पत्थर में रोमांस भी कहा जाता है। विश्व के कोने–कोने से सैलानी इसे देखने के लिए आते हैं। यह इमारत उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में स्थित है। इसका निर्माण मुगल बादशाह शाहजहाँ ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में करवाया था। इसे यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत सूची में 1983 ई. में शामिल किया गया।

निर्माण और विशेषताएँ – मुगल सम्राट शाहजहाँ ने 1631ई. में इसको बनवाना शुरू किया था जो 1653ई. में बनकर तैयार हुआ। शाहजहाँ ने इसके निर्माण के लिए कई देशों के कारीगरों को बुलवाया। उस्ताद अहमद लाहौरी ने इसका नक्शा तैयार किया था जो एक अफगानी था। शाहजहाँ ने दो इमारतों से प्रेरित होकर इसका स्वरूप निर्धारित किया था– हुमायूँ का मकबरा और मुगल सरदार खान– खानज का मकबरा। इस इमारत को बीस हजार मजदूरों ने बाईस साल में तैयार किया था। इसको बनाने में 3.2 करोड़ की लागत आई थी। मुख्य इमारत के नीचे मुमताज महल और शाहजहाँ की कब्रें बनाई गई हैं।

सम्पूर्ण इमारत उत्तर से दक्षिण की ओर आयताकार फैली हुई है। इसके मध्य में एक बाग है। चबूतरे के ऊपर बने सफेद संगमरमर के मकबरे में हिन्दू–ईरानी वास्तुकला के दर्शन होते हैं। जालीदार नक्काशी, उल्टा कमल, पिटरा–ड्यूरा की पच्चीकारी विशेष रूप से दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। पर्सी ब्राउन ने इस इमारत की प्रशंसा करते हुए लिखा है– **''जिसके दृष्टि पथ पर यमुना बह रही है, पीछे उद्यान, चश्में और प्रवेश द्वार हैं, वह ताज सम्पूर्ण विश्व में उसी प्रकार की कृतियों में अतुलनीय है।''**

बच्चो! आप अपने अभिभावकों या शिक्षकों के साथ ताजमहल घूमने की योजना जरूर बनाएँ। पूर्णिमा की रात में चाँद की चमकदार रोशनी में ताजमहल को देखकर आप भी कह उठेंगे– ''वाह ताज! क्या खूबसूरत इमारत है।''

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

सबसे शक्तिशाली कौन?

जंगल के सभी जानवर अति उत्साहित हो गये क्योंकि जंगल के राजा शेर ने घोषणा कर दी थी कि– ''दीपावली का त्यौहार आ रहा है और मैं चाहता हूँ कि इस वर्ष पूरा जंगल एकदम साफ सुथरा, प्रदूषण रहित, दीपों से जगमगाता हुआ अपनी अलग ही छटा बिखेरे, जिसे देख इनसानी जगत भी कहे कि– 'वाह! क्या दीपावली है।' इस कार्य के लिए मैं जंगल के सबसे होशियार जानवर को जिम्मा सौंपना चाहता हूँ। यदि अपना कर्त्तव्य वह ठीक ढंग से पूर्ण कर लेता है तो उसे सम्मान सहित वर्षभर अपने बगल की कुर्सी पर बिठाऊँगा और धन–दौलत से मालामाल कर दूँगा।''

घोषणा सुनते ही उपस्थित जानवरों में खुशी की लहर दौड़ गई उन्होंने पूँछ हिलाकर शेर की घोषणा का स्वागत किया। हाथी, घोड़े, लोमड़ी आदि सभी इस दौड़ में सबसे आगे निकल जाना चाहते थे और सभी ने अपने–अपने गुणों का बखान करना प्रारम्भ कर दिया जिसे सुन शेर असमंजस में पड़ गया अतः उसने अगले दिन नाम घोषित करने का निर्णय लिया। साथ ही परीक्षा लेने हेतु सभी जानवरों को एक प्रश्न का उत्तर लिखकर देने को कहा। प्रश्न था– ''सबसे शक्तिशाली पटाखा कौनसा है ?'' इस प्रश्न को सुनकर अधिकांश जानवर मुस्कुरा उठे। इतना सरल सा प्रश्न, इसमें कौनसी बड़ी बात है?

सभी जानवरों ने अपने अपने मतानुसार उत्तर लिख कर शेर को सौंप दिए। अगले दिन सभी जानवर समय पर सभा स्थल में एकत्रित हो गये, सभी उत्सुक थे कि शेर किसे कार्यभार सौंपने वाला है। नियत समय पर शेर ने चिम्पू बन्दर के नाम की घोषणा की, जिसे सुन सभी आश्चर्यचकित रह गए। बलिष्ठ जानवरों में असन्तोष फैल गया, तरह–तरह की बातें होने लगी।

शेर ने शंका का समाधान किया– ''आप में से अधिकांश ने सबसे शक्तिशाली पटाखों के नाम में बम, अनार, चकरी, राकेट आदि का उल्लेख किया किन्तु चिम्पू ही एक ऐसा था जिसने सबसे शक्तिशाली पटाखे के रूप में फुलझड़ी का नाम लिखा, साथ ही कारण बताते हुए उसने लिखा कि 'फुलझड़ी में अन्य समस्त प्रकार के पटाखों को जलाने की क्षमता निहित है किन्तु अन्य किसी पटाखे में इतनी शक्ति नहीं कि वह फुलझड़ी को जला सके।'' इस बात का मतलब है कि हमें कभी किसी को कमजोर नहीं समझना चाहिये। हो सकता है वह सबसे शक्तिशाली हो।

मीरा जैन
उज्जैन (मध्य प्रदेश)

मिट्टी के दीये

आज दीपावली है। शाम ढल रही थी। अँधेरा हो चला था। घर में लक्ष्मी पूजन की तैयारी शुरू हो गयी। माँ रूई की बत्तियाँ बनाकर उसे मिट्टी के दीयों में लगा रही थीं। उनके पास बैठा दीपू बड़े ध्यान से उन्हें यह सब करते देख रहा था।

"माँ। इसके बाद तो हम इन दीयों में तेल भरेंगे न?" दीपू ने माँ से पूछा। "हाँ बेटा। इसमें तेल डालना तो बहुत आवश्यक है। बिना तेल के तो रूई तुरन्त जल जायेगी। पहले हम थोड़ा तेल डालेंगे, जिससे रूई की बत्तियाँ पूरी तरह तेल में भींग जाये। फिर दीप जलाने के बाद थोड़ी–थोड़ी देर पर हम इन दीयों में तेल डालते रहेंगे जिससे दीये देर तक जलते रहें। अगर तेल थोड़ा भी कम हुआ, तो दीये बुझने लगेंगे। ये बिलकुल वैसे ही है, जैसे हमारे जीवन के लिए अच्छे संस्कार।" माँ मुस्कुराते हुए बोलीं।

"अच्छे संस्कार। मैं समझा नहीं माँ।" दीपू को माँ की बात समझ में नहीं आयी। "मैं समझाती हूँ। रूई की बत्तियों को कौन जलाये रखता है?" माँ ने उससे पूछा। "तेल।" दीपू बोला। "बिलकुल ठीक। तो तेल का दीयों में क्या काम हुआ?" माँ ने दीपू से फिर पूछा। "रूई की बत्तियों को देर तक जलाये रखना। जिससे आस–पास प्रकाश रहे।" दीपू बोला।

"ठीक कहा बेटा! हमारे जीवन में भी अच्छे संस्कार उसी तेल की तरह है, जिससे हम अपने आस–पास सुख का प्रकाश बिखेर सकते हैं।" माँ हँसकर बोली। "मैं समझ गया माँ।" दीपू बोला। "अच्छा। तो चलो अब हम लोग लक्ष्मी–पूजा करें।" माँ उसे दुलारते हुए बोली। दीपू को माँ की बात समझ में आ गयी थी। उसने माँ के साथ पूजा की, फिर घर को दीयों से सजाने में माँ की मदद करने लगा। ...और हाँ। जब तक उसे नींद नहीं आ गयी, उसने उन दीयों में तेल कम नहीं होने दिया। जिससे दीये देर रात तक अपना प्रकाश बिखेरते रहें।

पवन कुमार वर्मा
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

पढ़ो और जीतो

यहाँ दिये दस प्रश्नों के उत्तर इसी अंक की सामग्री पर आधारित है। आप पत्रिका पढ़ें और उनके सही उत्तर खोजकर एक कागज पर लिखें।अपना नाम, कक्षा, शहर व मोबाइल नं. भी इस पत्र पर लिखना है । उसका फोटो हमें व्हाट्सएप्प नं. 9351552651 पर दिनांक 15.11.23 तक भेजें।

1. ''दादा जी क्या हम इन बच्चों की कोई मदद कर सकते हैं?'' यह वाक्य किसने और क्यों कहा ?
2. खरगोश शब्द का क्या मतलब है ?
3. दीपक में तेल और जीवन में संस्कार का महत्त्व किस कहानी में बताया गया है ?
4. विश्व बाल दिवस कब मनाया जाता है ?
5. बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व का कौन सा गुण आपको सबसे अधिक प्रभावित करता है ?
6. इस बार की नाटिका का क्या संदेश है ?
7. तुलसी का मन किस बात पर नाचने लगा ?
8. भारत का कौन सा गाँव दुनिया का सबसे अमीर गाँव है ?
9. एशियाई खेल–2022 में भारत ने कुल कितने मेडल जीते?
10. ला टोमाटिना फेस्टिवल कहाँ मनाया जाता है?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ब) भाभा एटोमिक रिसर्च सेन्टर (स) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (द) हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (2) करनाल (हरियाणा) (3) चावल (4) 15 अगस्त 1969 को बंगलूरु में (5) देहरादून (उत्तराखंड) (6) विज्ञान एवं तकनीकी मन्त्रालय, भारत सरकार (7) डॉ. डी.एस. कोठारी (8)पिम्परी (पूना) एवं ऋषिकेश में (9) उपग्रहों का प्रक्षेपण (10) कॉन्सिल ऑफ साइंटिफिक एंड इन्डस्ट्रीयल रिसर्च, नई दिल्ली।

अन्तर ढूँढ़िए – (1) लड़के के नेकर का रंग अलग (2) लड़की की एक आँख बड़ी (3) Children's Day में s गायब (4) फूल का रंग अलग (5) एक तारा अतिरिक्त (6) एक लड़के का पैर उल्टा (7) लड़की की ड्रेस में S अतिरिक्त (8) एक फूल गायब

दिमागी कसरत– (1) चुनाव (2) अकेला (3) जगह (4) सूचना (5) मामूली (6) त्योहार (7) गायब (8) कागज (9) तकलीफ (10) तालाब

बताओ तो जानें

अनार – 3, शलजम– 1, सेव – 3, लौकी – 2, मिर्च – 3, गाजर– 2, मूली – 3, मटरफली –1, इमली – 1 और आम 2 बार चित्रित है।

बूझो तो जानें

(1) गणेश (2) लक्ष्मी (3) दीपावली (4) फुलझड़ी (5) अनार

पढ़ो और जीतो (अक्टूबर 2023) के अन्तर्गत प्रिशा चोखड़ा, कक्षा 9, ठाणे (महाराष्ट्र) एवं देवश्री महावर, कक्षा 4 जयपुर (राज.) के सभी उत्तर संतोषप्रद एवं सराहनीय रहे। इन्हें शीघ्र पुरस्कार भेजा जा रहा है।

वर्ग पहेली

1 ब	2 ना	3 र	स	■	4 म	5 ही	प	
6 ल	गा	व	■	7 दु	का	न	■	
रा	■	■	8 म	हा	न	■	9 ब	
म	■	10 र	जा	ई	■	11 का	क	
■	12 दी	प	क	■	13 ठु	म	री	
14 स	पा	ट	■	15 कौ	■	ना	■	
■	व	■	16 भा	र	17 त	■	18 का	
19 ग	ली	चा	■	20 व	न	रा	ज	

सुडोकू

3	2	6	4	9	1	5	7	8
5	8	1	3	6	7	9	2	4
4	7	9	2	8	5	3	6	1
8	4	5	9	2	3	7	1	6
2	6	3	7	1	4	8	9	5
1	9	7	6	5	8	4	3	2
9	1	8	5	3	2	6	4	7
6	5	4	1	7	9	2	8	3
7	3	2	8	4	6	1	5	9

दृष्टि शर्मा, कक्षा 8, बीकानेर

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 9, थाने

कीर्ति गोयल, कक्षा 6, सिलीगुड़ी

जाह्नवी भदानी, कक्षा 9, बीकानेर

प्रवीण मेघवाल, कक्षा 4, उदयपुर

आरोही माहेश्वरी, कक्षा 5, चित्तौड़गढ़

पहेलियाँ

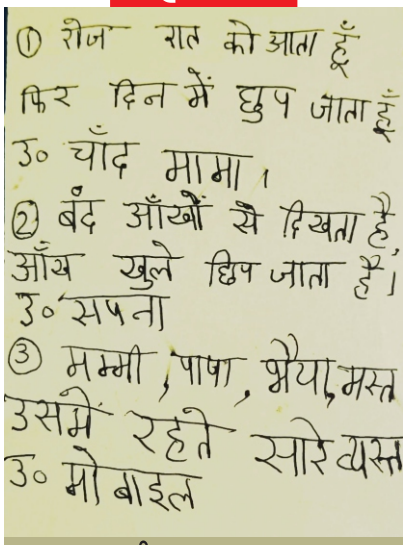

काव्या भाटी, कक्षा-2, तारानगर (चूरू)

आप भी अपनी
कलम और कूँची
का कमाल हमें
मोबाइल नं.
9351552651
पर या पत्रिका
के पते पर भेजें।

आज पाँव जमीं पर नहीं मेरे

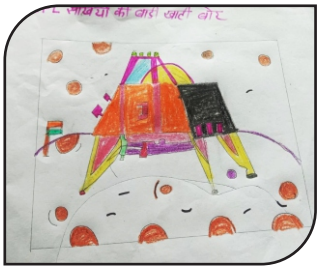

सुशीला कुमारी

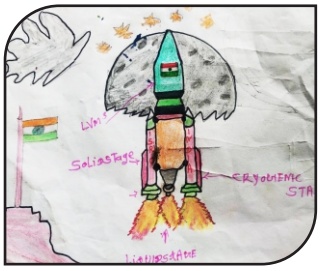

अंजलि कुमारी

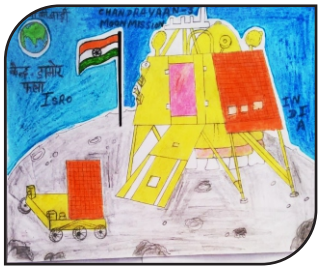

हंजा

हीरल कुमारी

राधिका

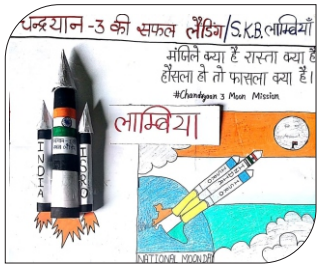

प्रियांशी

माया कुमारी

पुष्पा कुमारी

पीनल कुमारी

सीता, नीरू, ममता

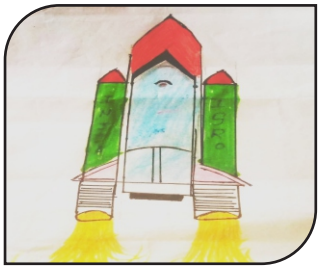

पूजा कुमारी

मीनल, मोनिका, जानकी

: सामग्री सौजन्य :

आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- पिंडवाड़ा एवं चित्तौड़

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

बर्लिन के आसमान में विशालकाय पतंगों की धूम

कई मीटर लम्बे पैरों वाले ऑक्टोपस से लेकर उड़ते हुए विशालकाय मेढक। यह नजारा है जर्मनी के बर्लिन में विशालकाय पतंग महोत्सव का। फेस्टिवल में 40 मीटर तक लम्बी अनोखी पतंगे उड़ाई जाती है। शाम होते-होते यही जगह आतिशबाजी के मैदान में बदल जाती है।

टमाटरों से खेली होली

स्पेन में ला टोमाटिना फेस्टिवल के लिए ट्रकों में भर कर करीब 1,20,000 किलो पके टमाटर लाए गए। पानी की बौछारों के बीच लोगों ने जमकर एक-दूसरे पर टमाटर फेंके। हर साल अगस्त के आखिरी बुधवार को स्पेन के वालेंसिया के पास ब्यूनोल गाँव में मनाए जाने वाले उत्सव में पूरा जोश और उत्साह दिखा। खेल-खेल में 1945 में शुरू हुआ यह मस्तीभरा उत्सव विश्व भर में काफी लोकप्रिय हो चुका है।

भटके लोगों को ढूँढ़ने वाला QR कोड लॉकेट बनाया

अक्षय रिदलन ने एक ऐसा क्यूआर कोड आइडेंटिफिकेशन सिस्टम तैयार किया है जो उन लोगों को ढूँढ़ लेता है जो अपने रास्ते से भटक गए हैं या गलत रूट पर पहुँच गए हैं। यह आइडेंटिफिकेशन सिस्टम उन लोगों के लिए बहुत काम का साबित हो रहा है जो डिमेंशिया, अल्जाइमर्स जैसी मेमोरी घटने की समस्या से जूझ रहे हैं।

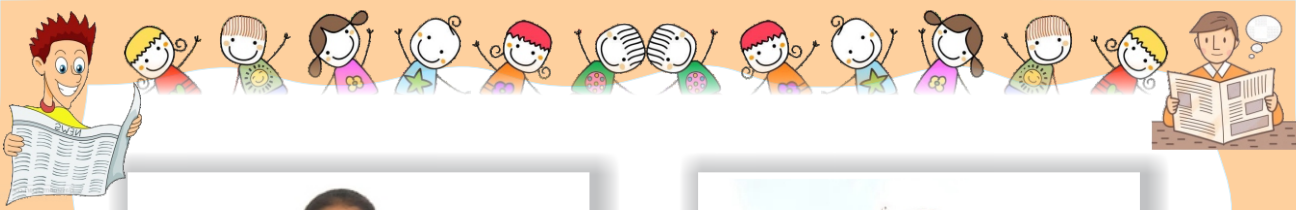

सान्वी का नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में

6 वर्ष की सान्वी अग्रवाल द्वारा प्रस्तुत किए गए "सम्पूर्ण शिव तांडव स्तोत्रम" को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज कर लिया गया है। सान्वी दिल्ली पब्लिक स्कूल की कक्षा एक में अध्ययनरत है। सान्वी में बचपन से ही गणेश जी के प्रति गहरी आस्था है। उसने शिव तांडव स्तोत्रम् 5 वर्ष की आयु में ही याद कर लिया था। इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड की तरफ से सान्वी को मैडल, सर्टिफिकेट, रिकॉर्ड बुक, बैज व गोल्डन पेन प्रदान कर सम्मानित किया गया।

108 फीट की आचार्य शंकर की मूर्ति का अनावरण

ओंकारेश्वर में एकात्मधाम धार्मिक पर्यटन का नया केन्द्र बनने जा रहा है। मुख्यमन्त्री श्री शिवराज सिंह ने ओंकारेश्वर में आचार्य शंकर की 108 फीट ऊँची बहुधातु से बनी मूर्ति का अनावरण किया। यह 10 किलोमीटर दूर से ही दिखाई देती है। इस प्रतिमा में 290 टन स्टील का उपयोग किया है। शंकराचार्य का दंड 101 फीट का है। 16 फीट ऊँचा कमल बनाने में करीब 8500 क्यूबिक फीट पत्थर का उपयोग किया गया। 100 टन ब्रॉन्ज पैनल उपयोग किये गये। नर्मदा घाट से प्रतिमा की 300 फीट ऊँचाई है।

किया तिरुवथिरा नृत्य, बना वर्ल्ड रिकॉर्ड

केरल के त्रिशूर में ओणम समारोह में कुटुम्बश्री महिला समूह की 7027 सदस्यों ने तिरुवथिरा नृत्य करते हुए वर्ल्ड रेकॉर्ड बनाया है। प्रतिभागियों की संख्या के कारण मेगा तिरुवथिराकली को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स व टेलेंट रिकॉर्ड बुक में शामिल किया गया।

प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान

गर्दन की यौगिक क्रिया

स्थिति : समपाद आसन में स्थिरता से सीधे खड़े रहें।

1. श्वास भरते हुए सिर को पीछे ले जाएँ तथा आकाश की ओर देखें, फिर श्वास छोड़ते हुए ठुड्डी को कंठकूप से लगाएँ तथा छाती की ओर देखें।
2. श्वास छोड़ते हुए गर्दन को दायीं ओर मोड़कर पीछे की ओर देखें, फिर गर्दन

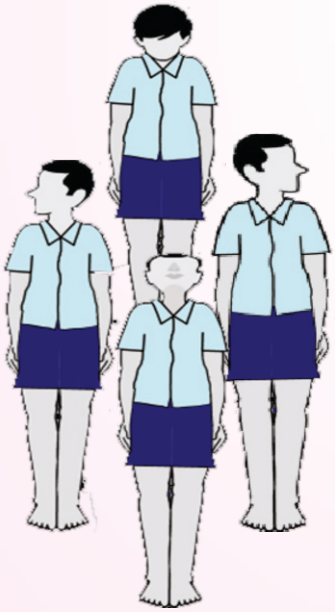

को बायीं ओर मोड़कर पीछे की ओर देखें। श्वास भरते हुए सामान्य अवस्था में आएँ।

3. श्वास छोड़ते हुए गर्दन को दायीं ओर झुकाकर दाएँ कान को दाएँ कंधे से लगाएँ, फिर गर्दन को बायीं ओर झुकाकर बाएँ कान को बाएँ कंधे से लगाएँ। श्वास भरते हुए सामान्य अवस्था में आएँ।
4. श्वास छोड़ते हुए गर्दन को दायीं ओर से धीरे–धीरे चारों ओर घुमाएँ। एक बार घड़ी की दिशा में और दूसरी बार घड़ी की विपरीत दिशा में घुमाएँ। श्वास भरते हुए सामान्य स्थिति में आएँ।
5. यह प्रयोग तीन बार करें।

लाभ

1. गर्दन की मांसपेशियाँ लचीली होती है।
2. थायराइड और पैराथायराइड ग्रन्थियों के स्राव सन्तुलित होते हैं।
3. मेरुदंड लचीला होता हैं।
4. शरीर का सन्तुलित विकास होता है।

महाप्राण ध्वनि

विधि : समपादासन में खड़े रहें या सुखासन में बैठें। शरीर को स्थिर एवं शिथिल रखें। नाक द्वारा धीरे–धीरे 6 सैकंड में श्वास भरें। अपने चित्त को कंठ–कूप,

स्वर–यंत्र पर केन्द्रित करें। अब कंठ और नाक से 12 सैकंड में भंवरे के गुंजन के समान मं... मं... मं... की ध्वनि करें व मस्तक में 2 सैकंड गूँज का अनुभव करें। इस प्रकार महाप्राण ध्वनि करते समय भरा हुआ सम्पूर्ण श्वास धीरे–धीरे स्वतः ही बाहर आ जाता है। पुनः 6 सैकंड में श्वास भरें, भावना करें कि शरीर के चारों ओर महाप्राण ध्वनि से गुंजित तरंगों का वलय बन रहा है। ध्वनि का तीन बार गुंजन करें।

लाभ

1. एकाग्रता बढ़ती है एवं चंचलता घटती है।
2. उच्चारण शुद्ध होता है एवं वाणी में मधुरता आती है।
3. आत्मविश्वास में वृद्धि होती है एवं भाव निर्मल होते हैं।
4. अनुशासन का विकास होता है।

संकल्प का प्रयोग

पहली विधि : मन, वाणी और शरीर को स्थिर करें। दोनों हाथ आनन्द केन्द्र पर जोड़कर संकल्प दोहराएँ–

''मैं चैतन्यमय हूँ। मैं आनन्दमय हूँ। मैं शक्तिमय हूँ। मेरे भीतर अनन्त चैतन्य का, अनन्त आनन्द का, अनन्त शक्ति का सागर लहरा रहा है। उसका साक्षात्कार करना ही मेरे जीवन का परम लक्ष्य है।''

दूसरी विधि : सीधे खड़े रहें। गर्दन और पीठ को सीधा रखें। मुट्ठी बन्दकर, श्वास भर कर दृढ़ता पूर्वक संकल्प को दोहराएँ :–

1. मैं स्वस्थ हूँ। शरीर के कण–कण में स्वास्थ्य का संचार हो रहा है।
2. मैं शक्तिशाली हूँ। शरीर के कण–कण में शक्ति का संचार हो रहा है।

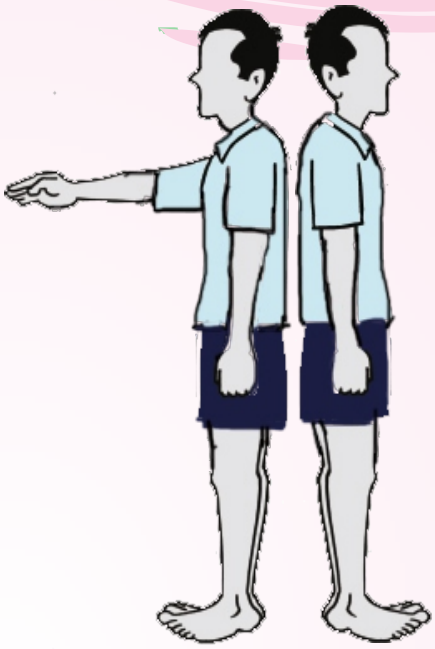

3. मैं पवित्र हूँ। शरीर के कण–कण में पवित्रता का संचार हो रहा है।
4. मैं प्रसन्न हूँ। शरीर के कण–कण में प्रसन्नता का संचार हो रहा है।
5. मैं सुन्दर हूँ। शरीर के कण–कण में सुन्दरता का संचार हो रहा है।
6. मैं विद्यार्थी हूँ। शरीर के कण–कण में विद्या का संचार हो रहा है।
7. मैं भारतीय हूँ। शरीर के कण–कण में भारतीयता का संचार हो रहा है।

लाभ

1. संकल्प शक्ति का विकास होता है। दृढ़ता की अनुभूति होती है।
2. शक्ति सम्पन्न बनकर साहसी बनता है।
3. प्रायश्चित कर अपनी कमियों और दोषों से छुटकारा पाता है।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

किड्स कॉर्नर

The Correct Word

Observe the picture in each row and select the correct word to complete the sentence.

The.....can swim.

cat fish

The.....can fly.

ant bird

The.....can twinkle.

star chair

The.....can bite.

bird ant

Beginning Sound

Observe each picture and say its naming word. Then circle the first letter of the word.

g f

p d

k c

o m

c k

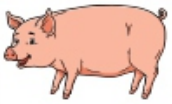

b p

– वेणु वनियाथ

जन्मदिन की बधाई

13 नवम्बर

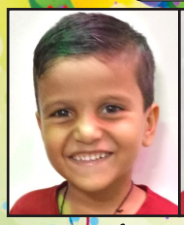

मानस शर्मा

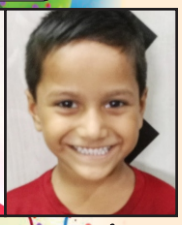

मनु शर्मा

पहुँना

14 नवम्बर

प्रिशा चौखड़ा

28 नवम्बर

स्नेहा चौखड़ा

ठाणे

15 नवम्बर

छवि शर्मा, बीकानेर

22 नवम्बर

पाखी जैन, उदयपुर

30 नवम्बर

शिवॉय शर्मा, कोटा

30 नवम्बर

तनिष्क भंडारी, उदयपुर

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC
International

Celebrating 33 YEARS
1989-2022

AGC
Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुविभा

अणुव्रत अमृत महोत्सव के गौरवशाली अवसर पर

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

की प्रस्तुति

अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत गीत महासंगान

श्रेष्ठ भारत का शंखनाद

18 जनवरी 2024

एक विश्व
एक स्वर
मानव धर्म मुखर

केन्द्रीय समन्वय कक्ष सम्पर्क सूत्र

अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत

97372 80171 ▪ 93746 13000
98254 04433 ▪ 93747 26946

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

“हम अपनी असफलता के लिए खुद ही जिम्मेदार है। अगर हम असफल नहीं होंगे तो हम कभी भी कुछ भी सीख नहीं पायेंगे। असफलता से ही सफलता पाने के लिए प्रेरित होते हैं।

आप ये हमेशा नहीं चुन सकते कि कौन आपके जीवन में आएगा, लेकिन जो भी हो, आप उनसे हमेशा शिक्षा ले सकते हो, वो हमेशा आपको एक सीख ही देगा।”

चन्द्रशेखर वेंकट रमन

जन्म : 07 नवम्बर 1888

निधन : 21 नवम्बर1970

तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली नामक स्थान में जन्में सी. वी. रमन प्रख्यात भारतीय भौतिक-शास्त्री थे। प्रकाश के प्रकीर्णन पर उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए वर्ष 1930 में उन्हें भौतिकी का प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार दिया गया। उनका आविष्कार उनके ही नाम पर रमन प्रभाव के नाम से जाना जाता है। 1954 ई. में उन्हें भारत सरकार द्वारा भारत रत्न की उपाधि से विभूषित किया गया तथा 1957 में उन्हें लेनिन शान्ति पुरस्कार प्रदान किया गया।